लखनऊ

रविवार, 26 जुलाई, 2026

वर्ष : 11 । अंक: 328

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

हिम्मत वो ताकत है, जो हारने के बाद भी कोशिश करना सिखाती है।

TODAY WEATHER

DAY 32° Hi | NIGHT 28° Low

संक्षेप

प्रियंका गांधी ने धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को बताया 'युवाओं की जीत', राहुल गांधी को दिया पूरा श्रेय

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफ़े का स्वागत किया। उन्होंने इसे देश के युवाओं की जीत बताया और पेपर लीक व शिक्षा सुधारों का मुद्दा लगातार उठाने के लिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी की तारीफ़ की। वायनाड में पत्रकारों से बात करते हुए प्रियंका ने कहा कि कांग्रेस परीक्षा में गड़बड़ियों के ख़िलाफ़ विरोध कर रहे छात्रों के साथ मज़बूती से खड़ी रही और शिक्षा सुधारों के लिए देशव्यापी आंदोलन खड़ा करने का काम किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी में हमने उन्हें हर संभव तरीके से मज़बूती से समर्थन देने की पूरी कोशिश की है। राहुल गांधी लंबे समय से पेपर लीक और परीक्षा सुधारों के मुद्दे पर बात करते रहे हैं। मुझे लगता है कि दो-तीन साल से ज्यादा समय हो गया है जब से वह लगातार यह मुद्दा उठा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के अभियान ने कांग्रेस, NSUI और यूथ कांग्रेस को देश भर में छात्रों के लिए समर्थन जुटाने के लिए प्रेरित किया। प्रियंका ने कहा कि उन्होंने पार्टी, NSUI और यूथ कांग्रेस के हम बाकी लोगों को न सिर्फ़ छात्रों का समर्थन करने के लिए, बल्कि छात्रों के अधिकारों और हमारी शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए पूरे देश में आंदोलन खड़ा करने के लिए भी प्रेरित किया। प्रधान के इस्तीफ़े को सिर्फ़ शुरुआत बताते हुए प्रियंका ने माना कि यह ख़बर सुनकर वह भावुक हो गई थीं। मैं सचमुच बहुत खुश हूँ। यह खबर सुनकर मैं थोड़ा भावुक हो गया क्योंकि पिछले 10-12 सालों में मैंने कई बार खुद से पूछा है: हमारे युवा कब जागेंगे? कांग्रेस नेता ने BJP और RSS पर देश की शिक्षा व्यवस्था को कमज़ोर करने और विरोध करने वालों के ख़िलाफ़ ज़बरदस्ती करने का आरोप लगाया।

छह दिनों के लंबे इंतज़ार के बाद फिर शुरू हुई अमरनाथ यात्रा, जम्मू से बालटाल के लिए 6,000 से अधिक श्रद्धालुओं का जत्था रवाना

जम्मू। जम्मू-कश्मीर में लगातार बारिश और खराब मौसम के कारण छह दिनों तक स्थगित रहने के बाद वार्षिक अमरनाथ यात्रा शनिवार को फिर से बहाल कर दी गई। अधिकारियों के अनुसार, भगवती नगर आधार शिविर से 6,000 से अधिक तीर्थयात्रियों का 18वां जत्था कश्मीर घाटी स्थित बालटाल आधार शिविर के लिए रवाना हो चुका है। गौरतलब है कि 19 जुलाई को खराब मौसम और भूस्खलन के खतरे को देखते हुए एहतियातन यात्रा रोक दी गई थी। मौसम का 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गुफा मंदिर तक जाने वाले दोनों मार्गों पर विशेष रूप से असर पड़ा था। इन मार्गों में अनंतनाग जिले का पारंपरिक 48 किलोमीटर लंबा पहलगाम मार्ग और गांदरबल जिले का अपेक्षाकृत छोटा 14 किलोमीटर लंबा बालटाल मार्ग शामिल है। अधिकारियों ने बताया कि 1,470 महिलाओं, 25 बच्चों और 54 साधुओं समेत कुल 6,269 तीर्थयात्रियों का 18वां जत्था कड़ी सुरक्षा के बीच 223 वाहनों के काफिले में शनिवार तड़के दो बजकर 40 मिनट पर बालटाल आधार शिविर के लिए रवाना हुआ। उन्होंने बताया कि पहलगाम मार्ग के लिए कोई काफिला रवाना नहीं किया गया।

पेपर लीक पर झुकी सरकार, धर्मेंद्र प्रधान ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। पेपर लीक मामले और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को देखते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। अपने इस्तीफे में उन्होंने कहा कि NEET पेपर लीक की जिम्मेदारी मैंने पहले दिन ही ले ली थी। इससे पहले CJP की अगुवाई में छात्र उनके इस्तीफे की मांग को लेकर एक महीने से भी अधिक समय से प्रदर्शन कर रहे थे। सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक ने 26 दिनों तक भूख हड़ताल की थी।

सोशल मीडिया पर अपने लंबे पोस्ट पर धर्मेंद्र प्रधान ने कहा, "पहले ही दिन से मैंने इस पर जिम्मेदारी ली। इस परिस्थिति से कभी मुंह नहीं मोड़ा। मेरा यह संकल्प रहा कि हम किसी भी मेधावी छात्र की संभावना परीक्षा माफिया के कारण खराब नहीं होने देंगे। हम किसी भी छात्र के साथ अन्याय नहीं होंगे।"

इस्तीफे के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के बीच मुलाकात हुई। इस बीच कॉकरोच जनता पार्टी के प्रतिनिधियों की केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात शाम 4 बजे होनी है।

धर्मेंद्र प्रधान ने बताई इस्तीफे की वजह

इस्तीफे के पीछे की वजह बताते हुए प्रधान ने कहा, "जंतर-मंतर पर और देश में जो भ्रम की स्थिति बनी है, इस स्थिति का राष्ट्र विरोधी ताकतें लाभ न उठाएं। देश की एकता बनी रहे। देश के किसी भी छात्र का भविष्य कानूनी पेचीदगियों में न उलझे। बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करें। करियर पर फोकस करें। इन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए मैंने अपना त्यागपत्र पीएम नरेंद्र मोदी को भेज दिया है।" अपने इस्तीफे के अंत में प्रधान ने कहा, "मैं प्रभु जगन्नाथ जी के आशीर्वाद से भविष्य में भारत माता, ओडिशा की जनता और देश के युवाओं की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हर संभव रूप मैं खुद को समर्पित करूंगा।" ओडिशा से नाता रखने वाले प्रधान साल 2021 में पहली बार शिक्षा मंत्री बनाए गए थे। 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद वह फिर से मंत्री नियुक्त हुए थे।

युवाओं की आकांक्षाओं, भावनाओं का सम्मान

मैं देश के युवाओं की आकांक्षाओं, भावनाओं और उनकी न्यायोचित अपेक्षाओं का गहरा सम्मान करता हूं। भारत की युवा पीढ़ी के सपनों को साकार करना हम सभी के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का नैतिक संकल्प रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में राष्ट्र की सेवा करने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ उसके लिए मैं प्रधानमंत्री मोदी का आभार प्रकट करता हूं।

कॉकरोच से पंगा न लें, धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर बोले अभिजीत दिपके, झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफ़े पर कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष अभिजीत दिपके ने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफ़ा दे दिया है। और यह इस्तीफ़ा इस बात का सबूत है कि अगर आप लोग डरते नहीं हैं, अगर आप लोग इस सरकार के सामने झुकते नहीं हैं, तो हम किसी का भी इस्तीफ़ा ले सकते हैं। दिपके ने कहा कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह लोकतंत्र है। उन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया है, लेकिन हमारी दो और मांगें हैं। हम ऐसे ही नहीं जाएंगे। धर्मेंद्र प्रधान ने इस्तीफ़ा दे दिया है। लेकिन जिन बच्चों ने आत्महत्या की, उनके परिवारों को एक करोड़ रुपये का मुआवज़ा मिलना चाहिए। उन्हें यह मिलना चाहिए।

दिपके ने कहा कि उन सभी परिवारों को एक करोड़ रुपये का मुआवज़ा। और दूसरी बात, 20 तारीख को जिन पुलिस वालों ने गुंडों जैसा बर्ताव किया, उन पुलिस अधिकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई होनी चाहिए। याद रखें, कॉकरोच से पंगा न लें। धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफा देने के बाद समर्थकों को उत्साहपूर्वक संबोधित करते हुए अभिजीत दिपके ने कहा कि झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए। राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) प्रश्नपत्र लीक मामले को लेकर नयी दिल्ली के जंतर मंतर समेत देशभर में जारी छात्रों के विरोध प्रदर्शन के बीच केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को अपना इस्तीफा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भेजा।

वांगचुक बोले- ये लोकतंत्र की जीत

सोनम वांगचुक ने अस्पताल से किए पोस्ट में लिखा- यह लोकतंत्र की जीत है, प्रत्यक्ष लोकतंत्र... सड़कों से मिली जीत। यह शांति, धैर्य और दृढ़ता की जीत है। CJP और GenZ को बधाई। देश के हर कोने से उठ खड़े होने के लिए सभी नागरिकों को धन्यवाद।

सत्य की जीत हुई, प्रधानमंत्री के हठ की हार हुई: खरगे

कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि भारत के छात्रों की गूंज आख़िरकार अंहकारी सत्ता की दहलीज़ तक पहुंच गई। ये हमारे करोड़ों युवाओं की जीत है जिन्होंने देशभर में शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए सड़क पर आवाज उठाई। ये सत्य की जीत है और मोदी जी के हठ की हार है। ये उन सभी परिवारों की जीत हैं जिन्होंने अपने ख़ून, अपने बच्चों को खोया, क्योंकि यह सरकार भ्रष्टाचारी है। ये साझा विपक्ष की जीत है, जिन्होंने छात्रों के हित में संसद से सड़क तक आवाज उठाई। अब बारी है मोदी जी को हमारी युवा पीढ़ी से माफ़ी माँगने की और जिन्होंने उनपर लाठी-डंडे-Pellet Guns चलवाई है, उनपर कठोर कार्यवाही करने की।

लोकतंत्र के लिए बड़ी जीत: केजरीवाल

आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सरकार को जनता के सामने झुकना पड़ा। उन्होंने एक्स पर एक वीडियो मैसेज शेयर कर लिखा, 'धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर पूरे देश को बधाई। लोकतंत्र के लिए बड़ी जीत। यह छात्रों की जीत है, यह Gen-z की जीत है। आपलोगों का संघर्ष रंग लाया।

धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे को लेकर प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा है कि आज 25 जुलाई 2026 वह दिन है जब हमारे लोगों ने अपना देश वापस लेना शुरू कर दिया है। मेरा मानना है कि यह भारत के युवाओं की जीत है। मुझे उनमें से हर एक पर गर्व है। उन पर आंसू गैस छोड़ी गई और उन्हें लाठियों से पीटा गया। आज यह हमारे युवाओं ने साबित कर दिया है। वे अपने विश्वास पर अड़े रहे, जो उनके हिसाब से सही था

प्रियंका गांधी

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे पर समाजवादी पार्टी के सांसद अखिलेश यादव ने कहा, 'यह नई पीढ़ी की एक बड़ी जीत है। सरकार को प्राइमरी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक हर चीज़ के बारे में बहुत गंभीरता से सोचना होगा। परीक्षा के पेपर लीक होने से रोकने के लिए ठोस कदम उठाने होंगे। आज के दौर में इंटरनेट और सोशल मीडिया के ज़रिए और सड़कों पर फैला युवाओं का यह आंदोलन आखिरकार दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी, भारतीय जनता पार्टी को - जिसके अनगिनत सहयोगी हैं - झुकने पर मजबूर कर गया।' यह युवाओं की एक बड़ी जीत है, लेकिन सभी राजनीतिक दलों के लोगों को इससे यह सीखना चाहिए कि भविष्य में परीक्षाओं की व्यवस्था को मज़बूत करना होगा ताकि कोई पेपर लीक न हो और युवाओं के लिए रोज़गार और नौकरियों के रास्ते खोलने होंगे...'

अखिलेश यादव

आज की पीढ़ी के बच्चों की परवरिश के लिए अलग तरीके की जरूरत है। इसमें आदेश देने के बजाय बातचीत पर ज्यादा जोर होना चाहिए। जब हम बच्चे थे, तब मां कुछ कह देती थीं या पिता कह देते थे कि कोई बहस नहीं होगी, तो हम उसे मान लेते थे। हम सवाल नहीं करते थे, क्योंकि हमें पता था कि उन्होंने जीवन देखा है और वे चीजों को हमसे बेहतर समझते हैं। आज ऐसा नहीं है। आप बच्चों के साथ सख्त रवैया नहीं अपना सकते। आपको उन्हें चीजें समझानी होंगी। वे ऐसे माहौल में बड़े हो रहे हैं, जहां हर तरफ भौतिक चीजों का प्रभाव और लगातार प्रचार मौजूद है। हमें उन्हें इस उलझन से बाहर निकलने का रास्ता दिखाना होगा। उन्हें हमारा समय चाहिए। उन्हें बातचीत चाहिए। आदेश नहीं, बल्कि चर्चा चाहिए। हुक्म नहीं, बल्कि सहमति चाहिए।

मोहन भागवत

'जरा दिल से सोचिए', सोनम वांगचुक की पत्नी ने लोगों से की अपील ; बोलीं- व्रत तोड़ने के लिए उन्हें गलत न समझें

नई दिल्ली, एजेंसी। सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की पत्नी गीतांजलि अंगमो ने उनके 26 दिन लंबे अनशन के बाद आलोचना करने वालों से भावनात्मक अपील की है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि वांगचुक ने खुद से बड़े उद्देश्य के लिए 26 दिनों तक उपवास किया और लोगों को उन पर जल्दबाजी में टिप्पणी करने से पहले उनके त्याग को समझना चाहिए।

गीतांजलि ने कहा, अनशन खत्म करने के फैसले को लेकर उनके (वांगचुक) प्रति जल्दबाजी में कोई नकारात्मक राय नहीं बनाएं। उन्होंने कहा कि सोनम ने खुद से भी बड़े मकसद के लिए भारी शारीरिक कीमत चुकाई है और वह आलोचना के बजाय सहानुभूति के हकदार हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर एक भावुक पोस्ट में आंग्मो ने कहा कि अनशन के दौरान 11 किलो वजन (जिसमें मसल्स भी शामिल हैं) घटने के बाद वांगचुक आईसीयू में भर्ती हैं। उन्होंने लोगों से उनके इस फैसले के पीछे के त्याग को समझने की अपील की।

उन्होंने लिखा, 'वांगचुक की आलोचना करने से पहले जरा रुककर सोचिए कि खुद से भी बड़े मकसद के लिए 26 दिनों तक अनशन करने का जज्बा क्या होता है।'

11 किलो घटा सोनम वांगचुक का वजन

उन्होंने कहा, 'आज वे आईसीयू में हैं, उनका 11 किलो वजन घट गया है (जिसमें मसल्स भी शामिल हैं), क्योंकि उन्होंने आराम के बजाय त्याग को चुना। उन पर अपनी उम्मीदों और राजनीतिक हिसाब-किताब का बोझ डालने से पहले, कम से कम हम उनके प्रति थोड़ी सहानुभूति तो दिखा ही सकते हैं।'

बिहार बंद के दौरान राज्य में भड़की हिंसा, छपरा-भागलपुर समेत 8 जिलों में पुलिस-प्रदर्शनकारियों में झड़प

पटना, एजेंसी। पटना में AISA के बिहार बंद के दौरान पटना के डाक बंगला चौराहा और स्टेशन के बीच इकट्ठा हुए कुछ छात्रों के साथ पुलिस की झड़प हुई। पुलिस ने हल्का बल प्रयोग किया। छात्रों ने पुलिस पर पथराव भी किया और छात्रों को अब तीतर बीतर कर दिया गया है। कुछ प्रदर्शन कार्यों को हिरासत में लिया गया और इन्हें यहां से भगा दिया गया है। पटना में तेजप्रताप यादव भी पहुंचे। उन्होंने गांधी मैदान पहुंचकर तेजप्रताप यादव ने आज बिहार बंद का समर्थन किया। तेजप्रताप यादव ने कहा है कि शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देना होगा।

छपरा में बिहार बंद के मद्देनजर जिला प्रशासन के द्वारा काफी सुरक्षा व्यवस्था चुस्त रखी गई इस दौरान

सभी प्रमुख चौक चौराहों पर भारी संख्या में जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन के अधिकारी तैनात थे। सबसे ज्यादा प्रदर्शन कारी छात्रों का हुजूम शहर के थाना चौक और नगर पालिका चौक पर जुटा और सरकार के विरुद्ध नारेबाजी की कई जगहों पर छात्रों के द्वारा छिट पुट हिंसा को भी अंजाम दिया गया।

CPI-M के विधायक संदीप सौरभ गिरफ्तार

इससे पहले नीट पेपर लीक के विरोध में 3 दिन पहले पटना में हुए हिंसक प्रदर्शन के संबंध में सीपीआई (माले) के विधायक संदीप सौरभ को कथित तौर पर हिंसा भड़काने" के आरोप में कल शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया गया। पटना के मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने उन्हें 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। पटना में 22 जुलाई को ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (AISA) की ओर से आयोजित विरोध प्रदर्शन में सौरभ ने हिस्सा लिया था। यह प्रदर्शन हिंसक हो गया था, जिसमें बीजेपी नेताओं पर हमला किया गया और उनकी गाड़ियों में तोड़फोड़ की गई थी। इस मामले में सौरभ की भूमिका को लेकर सत्तारूढ़ एनडीए के विधायकों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी और उन पर प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़काने का आरोप लगाया था।

नाबालिग की बुआ पर दर्ज पॉक्सो केस रद्द, वैवाहिक विवाद में ससुराल पक्ष को घसीटने पर क्या कहा?

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने वैवाहिक विवाद से जुड़े मामलों में ससुराल पक्ष के लोगों को बदला लेने के लिए आपराधिक मामलों में घसीटे जाने की बढ़ती प्रवृत्ति पर चिंता जताई है। कोर्ट ने कहा कि ऐसे मामले अक्सर व्यक्तिगत रंजिश निकालने का जरिया बन जाते हैं, जिसमें मासूम लोगों को बेवजह फंसाया जाता है। अदालत ने एक नाबालिग की बुआ के खिलाफ दर्ज पॉक्सो मामला रद्द करते हुए यह टिप्पणी की। बच्चे के माता-पिता के बीच लंबे समय से वैवाहिक विवाद चल रहा है।

न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ ने मामले को रद्द करने से इनकार करने के बॉम्बे हाईकोर्ट के फैसले की भी आलोचना की। पीठ ने कहा कि

हाईकोर्ट ने रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री की जांच किए बिना ही याचिका खारिज कर दी। 23 जुलाई को दिए अपने आदेश में पीठ ने कहा, ₹वैवाहिक विवाद से जुड़े मामलों में हिसाब बराबर करने के लिए ससुराल पक्ष के लोगों को आपराधिक मामलों में घसीटना अब आम ही नहीं, बल्कि एक तरह से परंपरा बन गई है। अक्सर बच्चों का इस्तेमाल भी एक-दूसरे को बदनाम करने के लिए किया जाता है। लेकिन इस मामले में तलाकशुदा मां की ओर से लगाए गए ये आरोप चौंकाने वाले हैं कि उसके बेटे का उसकी बुआ लगातार यौन उत्पीड़न करती रही।' पीठ ने कहा कि यह एफआईआर तलाकशुदा पिता की ओर से पहले दर्ज कराई गई एफआईआर की जवाबी कार्रवाई प्रतीत होती है। उस एफआईआर में भी इसी तरह के गंभीर आरोप लगाए गए थे। हालांकि वह मामला लड़के की जुड़वां बहन के संबंध में उसके मामा के खिलाफ था। सुप्रीम कोर्ट ने सितंबर 2023 में आपसी सहमति से हुए तलाक के आदेश का अवलोकन किया। अदालत ने कहा कि अपीलकर्ता जुड़वां बच्चों की पैतृक बुआ हैं। बच्चों के पिता, जो उनके भाई हैं, का तलाक हो चुका है। पीठ ने कहा कि बच्चे फिलहाल पिता की अभिरक्षा में हैं और मां को उनसे मिलने का अधिकार दिया गया है। मां का आरोप था कि उसका बेटा तब भी यौन उत्पीड़न की शिकायत करता था, जब वह वैवाहिक घर में रह रही थी। उसने यह भी दावा किया कि उसने ऐसी एक घटना खुद देखी थी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि तलाक की कार्यवाही के दौरान ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया गया था और न ही 17 मार्च 2024 को दर्ज एफआईआर से पहले कभी कोई शिकायत की गई। यह एफआईआर पिता की ओर से दर्ज समान प्रकृति की एफआईआर के कुछ घंटे बाद दर्ज कराई गई थी। अदालत ने कहा कि प्रथम दृष्टया एफआईआर भरोसा पैदा नहीं करती। अपीलकर्ता की ओर से पेश अधिवक्ता सना रईस खान ने दलील दी कि यह अभियोजन आपराधिक न्याय प्रणाली के दुरुपयोग का स्पष्ट उदाहरण है और इसे केवल बच्चों की अभिरक्षा को लेकर चल रहे विवाद में निजी रंजिश निकालने के लिए शुरू किया गया। उन्होंने कहा कि आरोप तभी सामने आए, जब पिता ने ननिहाल पक्ष के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

शिक्षा व्यवस्था पर राहुल गांधी की हुंकार : धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा पहला कदम, मोदी अब भी माफी मांगें

नई दिल्ली, एजेंसी। विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफ़े को भारत की शिक्षा व्यवस्था को फिर से बनाने की दिशा में एक प्रतीकात्मक और अहम कदम बताया। साथ ही, उन्होंने छात्रों पर की गई कार्रवाई के लिए ज़िम्मेदार अधिकारियों के ख़िलाफ़ कार्रवाई और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से माफ़ी की मांग की। धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफ़े की घोषणा की। यह एक दुर्लभ मामला है जब मोदी सरकार के किसी वरिष्ठ मंत्री ने लगातार हो रहे विरोध-प्रदर्शनों और राजनीतिक दबाव के बीच अपने पद से इस्तीफ़ा दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफ़ा हमारी शिक्षा व्यवस्था को फिर से बनाने की दिशा में

एक बहुत बड़ा कदम है। यह एक प्रतीकात्मक कदम है क्योंकि वे खुद एक प्रतीक थे, लेकिन फिर भी यह एक बड़ा कदम है। मैं हर उस छात्र और युवा को बधाई देना चाहता हूँ जो सड़कों पर उतरे और लोकतंत्र के लिए, देश के भविष्य के लिए और संविधान की रक्षा के लिए लड़े। मुझे आप पर गर्व है। बहुत बढ़िया... मैं सरकार को याद दिलाना चाहता हूँ: अभी भी दो माँगें बाकी हैं।

तहसील से चंद कदम दूर सड़क बनी तालाब

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

बल्दीराय/सुल्तानपुर। बल्दीराय तहसील क्षेत्र के चकटेरी के निकट मुसाफिरखाना-देवरा मार्ग पर शारदा नहर से निकले रजबहा (छोटी नहर) का पानी उफान पर आने से सड़क पर भर गया है। सड़क पर कई स्थानों पर पानी जमा होने से पूरा मार्ग तालाब जैसा दिखाई दे रहा है, जिससे राहगीरों, दोपहिया और चारपहिया वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि नहर विभाग द्वारा कराई गई सिल्ट सफाई केवल औपचारिकता साबित हुई है। समय पर और प्रभावी ढंग से सफाई न होने के कारण पानी का बहाव बाधित हो गया और रजबहा का पानी सड़क पर फैल गया। ग्रामीणों का यह भी आरोप है कि नहर की पटरी (किनारा) मजबूत न होने के कारण भी पानी सीधे सड़क पर आ गया, जिससे समस्या और गंभीर हो गई है। सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि यह स्थान बल्दीराय तहसील से महज कुछ ही दूरी पर स्थित है, लेकिन इसके बावजूद संबंधित विभाग और प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। लगातार जलभराव के कारण दुर्घटना की आशंका भी बढ़ गई है, विशेषकर रात के समय वाहन चालकों को काफी जोखिम उठाकर गुजरना पड़ रहा है। ग्रामीणों और राहगीरों ने प्रशासन एवं नहर विभाग से मांग की है कि रजबहा के पानी की निकासी की तत्काल व्यवस्था कराई जाए, नहर की पटरी को मजबूत किया जाए तथा मार्ग पर जमा पानी हटाकर आवागमन को सुचारु बनाया जाए, ताकि लोगों को राहत मिल सके और किसी संभावित दुर्घटना से बचा जा सके।

लाठियां चलीं, दमन हुआ, लेकिन जीता देश का युवा रू अभिषेक सिंह राणा

सुल्तानपुर। केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे के बाद कांग्रेस जिलाध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा का बड़ा बयान सामने आया है। जारी वीडियो संदेश में उन्होंने इसे देशभर के छात्र-युवाओं के संघर्ष की बड़ी जीत बताया। अभिषेक सिंह राणा ने शायराना अंदाज में कहा, ष्कौन कहता है कि आसमान में सुराख नहीं हो सकता, जरा तबीयत से पत्थर तो उछालो यारों। उन्होंने कहा कि आज यह पंक्तियां पूरी तरह सार्थक साबित हुई हैं। उन्होंने कहा कि नीट, सीबीएसई सहित विभिन्न परीक्षाओं में बार-बार हुए पेपर लीक से करोड़ों युवाओं का भविष्य दांव पर लग गया था। छात्र-युवा लगातार सरकार से जवाबदेही और केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग कर रहे थे, लेकिन सरकार ने उनकी आवाज़ सुनने के बजाय शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे छात्रों पर लाठीचार्ज कराया, वाटर कैनन चलवाई और आंसू गैस के गोले छोड़े। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि दमन के बावजूद देश का युवा एक महीने तक अपने अधिकारों और न्याय की मांग पर डटा रहा। आखिरकार छात्रों के संघर्ष के आगे सरकार को झुकना पड़ा और केंद्रीय शिक्षा मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा। उन्होंने कहा कि यह किसी एक दल की नहीं, बल्कि देश के करोड़ों छात्र-युवाओं की जीत है। यह संघर्ष बताता है कि जब युवा अपने अधिकारों के लिए एकजुट होकर लोकतांत्रिक तरीके से आवाज़ उठाते हैं।

दिनभर गरजती रही जेसीबी, चलता रहा अवैध खनन

आर्यावर्त संवाददाता

बल्दीराय/सुल्तानपुर। हलियापुर थाना क्षेत्र के ग्राम जरईकला में शनिवार को दिनभर जेसीबी मशीन से अवैध मिट्टी खनन और उसकी बिक्री होती रही, लेकिन स्थानीय पुलिस एवं संबंधित विभागों की ओर से कोई प्रभावी कार्रवाई सामने नहीं आई। ग्रामीणों का आरोप है कि सुबह लगभग 10 बजे से खेल मैदान के निकट जेसीबी द्वारा लगातार मिट्टी की खुदाई कर ट्रैक्टर-ट्रॉलियों से बाहर भेजी जाती रही, जबकि प्रशासन पूरे घटनाक्रम के दौरान मूकदर्शक बना रहा।

स्थानीय लोगों का कहना है कि क्षेत्र में अवैध खनन अब सामान्य बात बन चुका है। कहीं गोमती नदी के किनारे से बालू का अवैध खनन किया जाता है तो कहीं बिना अनुमति खेतों और तालाबों से मिट्टी निकालकर बेची जाती है। आरोप है कि खनन माफिया नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाते हुए सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ग्रामीणों का यह भी दावा है कि शनिवार को चल रहे खनन के संबंध में जानकारी जुटाने पर किसी वैध अनुमति की जानकारी सामने नहीं आई। यदि यह आरोप सही हैं, तो यह संबंधित विभागों की निगरानी व्यवस्था और कार्रवाई पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े करता है। लोगों का आरोप है कि क्षेत्र में लगातार हो रहे अवैध खनन के पीछे कुछ जिम्मेदार अधिकारियों और खनन माफिया की कथित मिलीभगत से भी इनकार नहीं किया जा सकता, जिसकी निष्पक्ष जांच आवश्यक है। क्षेत्रवासियों ने जिला प्रशासन से पूरे प्रकरण की उच्चस्तरीय जांच कराने, अवैध खनन में संलिप्त लोगों की पहचान कर उनके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने तथा पुलिस एवं खनन विभाग की भूमिका की भी निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। यदि समय रहते प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई तो अवैध खनन से पर्यावरण, सार्वजनिक भूमि और सरकारी राजस्व को लगातार नुकसान पहुंचने की आशंका बनी रहेगी।

झूला व कजरी की विलुप्त हो रही है प्रथा

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। समय के साथ पुरानी सांस्कृतिक प्रथाएं अब दम तोड़ रही है। पहले आषाढ़ माह के अंतिम पखवारे से शुरू होने वाले झूला व कजरी अब धीरे धीरे विलुप्त होते जा रहे है।अब केवल भोजपुरी, फिल्मी गानों पर रील बनाने का फैशन चल रहा है।

दो तीन दशक पूर्व की ओर चले तो बारिश के मौसम में हरियाली के बीच गांवों में पेड़ों पर झूले डाले जाते थे। कुछ जगह बांस के,कुछ जगह पुराने टायर के और कुछ जगह रस्सों के झूले डाले जाते थे। जिस पर गांव की बहन बेटियां झूला झूलते हुए कजरी गायन करती थी। वह मनमोहक दृश्य अब सुदूर होता चला जा रहा है। धान की रोपाई के बाद सावन महीने के त्यौहारों की अच्छी खासी तैयारी होती थी। गांव के युवा गावो में रक्षाबंधन व नागपंचमी पर होने वाली लंबी कूद(अखाड़ा), कुश्ती की तैयारी करने में लग जाते थे। वहां कोई बहुत बड़ा ईनाम नहीं होता था लेकिन यह प्रतिस्पर्धा रहती थी कि इस बार हमें अपने गांव ने जीत हासिल करनी है।जिसको लेकर महीने भर पहले से जी तोड़ मेहनत करते थे। तब सोशल मीडिया युग नहीं था कि हम यहां जा रहा है यह कर रहे है यह पोस्ट किया जाए। तब स्कूली शिक्षा से वापस लौटने के बाद बच्चे गांव में एक दूसरे के साथ मिलकर खेल खेलते थे।एक दूसरे के प्रति अपनापन व सम्मान हुआ करता था। ऐसा नहीं है कि तब के युवा उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त करते थे तब लोग आईएएस, आईपीएस, सेना हर जगह जाते थे। लेकिन उन्हीं सब तैयारियों के बीच खेल कूद भी उनके जीवन का अहम हिस्सा हुआ करता था। जिससे उनके शरीर की फिटनेस बरकरार रहती थी।

सपा सांसदों का 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल पहुंचेगा रामपुर, आंदोलनरत छात्रों को देंगे समर्थन

आर्यावर्त संवाददाता

रामपुर। जौहर यूनिवर्सिटी के 40 में से 38 भवनों को ध्वस्त करने के आदेश के खिलाफ सपा खुलकर मैदान में आ गई है। शनिवार को सपा के सांसद और पूर्व सांसदों का 12 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल रामपुर पहुंचेगा। पहले सांसद आंदोलनरत छात्रों से मुलाकात करेंगे और फिर डीएम को ज्ञापन दिया जाएगा।

बृहस्पतिवार को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय के नेतृत्व में विधायक और पूर्व विधायकों का एक दल रामपुर गया था। सपा के प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल की ओर से जारी पत्र के अनुसार, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देश पर गठित प्रतिनिधिमंडल शनिवार को जिला प्रशासन से मुलाकात कर यूनिवर्सिटी के संबंध में वार्ता करेगा। उनकी ओर से जारी पत्र में कहा गया है कि जौहर यूनिवर्सिटी के भवनों पर बुलडोजर चलाने की कार्रवाई शिक्षा के अधिकार और संविधान की भावना के विपरीत है। पार्टी का मानना है कि विश्वविद्यालय में गरीब, पिछड़े और दलित वर्ग सहित विभिन्न समुदायों के हजारों छात्र-छात्राएं नाममात्र की फीस पर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

ऐसे में ध्वस्तीकरण से विद्यार्थियों के भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। प्रतिनिधिमंडल डीएम से मुलाकात कर ध्वस्तीकरण की कार्रवाई नहीं किए जाने के संबंध में वार्ता करेगा तथा पूरे मामले की रिपोर्ट समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय को सौंपेगा।

प्रतिनिधिमंडल में यह रहेंगे शामिल

रामपुर सपा जिलाध्यक्ष अजय सागर, सांसद जावेद अली खान, महाराष्ट्र के सपा प्रदेशाध्यक्ष एवं विधायक (पूर्व सांसद) अबू आसिम आजमी, सांसद हरेंद्र सिंह मलिक, सांसद रुचिवीरा, सांसद इकरा हसन, सांसद राजीव राय, सांसद मोहिब्बुल्लाह नदवी, सांसद नीरज मौर्य, सांसद जियाउर्रहमान बर्क, सांसद देवेश शाक्य तथा सांसद राम शिरोमणि वर्मा शामिल रहेंगे।

सपा से जुड़े सांसदों का प्रतिनिधि मंडल शनिवार को रामपुर पहुंच रहा है। वह यहां यूनिवर्सिटी के छात्रों से मुलाकात करेगा और फिर डीएम को ज्ञापन सौपेगा। प्रशासन से इसकी अनुमति मिल गई है। -अजय सागर, सपा जिलाध्यक्ष

पुलिस प्रशासन भी सतर्क

रामपुर। सपा के प्रतिनिधि मंडल के रामपुर आगमन को लेकर पुलिस प्रशासन पूरी तरह सतर्क हो गया है। प्रशासन ने पुलिस के साथ ही प्रशासनिक अफसरों की टीम को निगरानी के लिए लगाया है। इस दौरान जगह-जगह पुलिस तैनात की जाएगी।

धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा युवाओं एवं छात्रों की जीत : वरुण मिश्र

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे के बाद राजनैतिक दलों की प्रतिक्रियाएं सामने आने लगी हैं इसी क्रम में कांग्रेस नेता एवं पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष प्रत्याशी वरुण मिश्र ने कहा कि यह इस्तीफा युवा आंदोलनकारियों की जीत है उन्होंने कहा कि देश के नौजवानों की अंगड़ाई ने सरकार को सत्ता की नींद से जगा दिया है उन्होंने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा सिर्फ शुरुआत है अभी बाकी की लड़ाई भी बाकी है देश में होने वाली सभी परीक्षाओं एवं भर्तियों को निष्पक्ष बनाना सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए उन्होंने कांग्रेस के नेता राहुल गांधी एवं प्रियंका गांधी को भी धन्यवाद दिया है उन्होंने कहा कि इन दोनों नेताओं के छात्रों के संघर्ष में साथ देने के कारण ये लड़ाई जीती है साथ ही उन्होंने समूचे इंडिया गठबन्धन एवं कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को बधाई दी है।

नशे में टुन्न युवक ने रुकवा दी ट्रेन... चालक बोला- भाई ये स्टेशन नहीं... पटरी है

आर्यावर्त संवाददाता

हरदोई। उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में सीतापुर-बालामऊ रेलवे लाइन पर एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया। अटवा मुठिया और कमालपुर रेलवे स्टेशनों के बीच एक युवक शराब के नशे में सीधे चलती ट्रेन के नीचे आ गया। ट्रेन चालक की समय पर पड़ी नजर और आपातकालीन ब्रेक लगाने की वजह से युवक की जान बच गई। इस पूरी घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, युवक अत्यधिक शराब के नशे में धुत था और पटरी के पास अनियंत्रित होकर सीधे ट्रेन के पहियों के नीचे जा गिरा। लोको पायलट की नजर ट्रेन के बैक मिरर पर पड़ी और उसने बिना एक सेकेंड गंवाए फौरन इमरजेंसी ब्रेक लगा दिए। ट्रेन रुकते ही रेलवे कर्मचारियों और स्थानीय ग्रामीणों ने मिलकर मशक्कत के बाद युवक को इंजन/डिब्बों के नीचे से सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

घटना का वीडियो इंटरनेट पर आते ही लोग लोको पायलट की मुस्तैदी और त्वरित निर्णय क्षमता की जमकर सराहना कर रहे हैं। वीडियो पर लोग तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। कई यूजर्स ने तंज कसते हुए लिखा, "इतना भी नशा मत करो कि ट्रेन को ही तुम्हारे लिए रुकना पड़ जाए।" हालांकि यह घटना एक गंभीर चेतावनी भी है कि पटरी के आसपास नशा या लापरवाही जानलेवा साबित हो सकती है। इस बार किस्मत और लोको पायलट की मुस्तैदी ने युवक की जान बचा ली।

बीवी ने गिफ्ट की थार, उसी में पति ने कर दी हत्या... फिर नहर में फेंकी लाश, इस बात से हो गया था परेशान

आर्यावर्त संवाददाता

मुरादाबाद। मुरादाबाद के कटघर थाना क्षेत्र से शुरू हुई लापता युवती की गुत्थी का पुलिस ने खौफनाक खुलासा किया है। हैदराबाद में लॉ की पढ़ाई कर रही 23 वर्षीय अदीला रहमान की उसके ही पति गुलफाम अली ने गोली मारकर हत्या कर दी। आरोपी ने वारदात को अंजाम अपनी थार कार के अंदर दिया और पहचान छिपाने के लिए शव को उत्तराखंड के रुड़की स्थित नहर में फेंक दिया था।

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि अदीला और गुलफाम ने इसी साल अप्रैल महीने में अजमेर शरीफ में प्रेम विवाह किया था और दोनों नोएडा में रह रहे थे। अदीला अपने पति गुलफाम के तमाम खर्चे खुद उठाती थी और उसने पति को एक महिंद्रा थार कार भी उपहार में दी थी। अदीला चाहती थी कि गुलफाम अपने परिजनों से सभी रिश्ते तोड़

ले, जिसको लेकर दोनों के बीच अक्सर कहासुनी और विवाद होता रहता था।

पुलिस को गुमराह करने

सरेंडर कर गया जेल

वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी ने शातिराना चाल चली। पुलिस की नजरों से बचने के लिए गुलफाम रामपुर के एक पुराने आपराधिक मामले में कोर्ट के सामने सरेंडर कर जेल चला गया। 4 जुलाई को रुड़की के मंगलौर में नहर से अदीला का शव मिला था। 72 घंटे तक शिनाख्त न होने के कारण उत्तराखंड पुलिस ने नियमानुसार शव का लावारिस समझकर अंतिम संस्कार कर दिया था।

SP सिटी का बयान और पुलिस रिमांड

मुरादाबाद के SP सिटी कुमार रणविजय सिंह ने बताया कि पहले गुमशुदगी और फिर परिजनों की तहरीर पर अपहरण का केस दर्ज किया गया था। रामपुर जेल में बंद गुलफाम से कटघर पुलिस ने कड़ाई से पूछताछ की, जिसमें उसने हत्या की पूरी बात कबूल कर ली। पुलिस ने अदालत से आरोपी की पुलिस कस्टडी रिमांड (PCR) हासिल की है। आरोपी की निशानदेही पर वारदात में प्रयुक्त थार कार, हथियार और अन्य साक्ष्य जुटाकर वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

अवैध ब्रेकर से गई राहुल की जान : परिजनों ने पूछा किसने बनवाया और क्यों हटाया? आईजीआरएस से भी नहीं मिला जवाब

आर्यावर्त संवाददाता

गाजियाबाद। साहिबाबाद के कॉलोनी में अवैध तौर पर बनाए गए ब्रेकर से 7 जून भोपुरा निवासी राहुल कुमार (34) की मौत हो गई थी। हादसे के एक दिन बाद पुलिस जांच में इसका खुलासा हुआ था। इसके बाद परिजनों ने मामले की शिकायत पुलिस और नगर निगम से भी की। परिजनों ने कॉलोनी में बिना मानकों के बनाए गए ब्रेकर पर भी सवाल उठाए थे लेकिन आज तक उनकी कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई।

बाद में परिजनों ने मामले की शिकायत आईजीआरएस पोर्टल पर की तो वहां जो जवाब मिला वो हैरान करने वाला है। आईजीआरएस पर किए गए सवालों के जवाब की जगह निगम अधिकारियों ने बताया कि यह जानकारी आईजीआरएस के माध्यम से देना उपयुक्त नहीं है। निगम अधिकारियों के इस जवाब से परिजनों में व्यवस्था के खिलाफ नाराजगी बढ़ गई है। शालीमार गार्डन थानाक्षेत्र के राजेंद्र नगर सेक्टर दो स्थित आरएम ब्लॉक सोसायटी के सामने सात जून की देर रात हुए हादसे में घायल टीलामोड़ के भोपुरा निवासी राहुल कुमार (34) की मौत हो गई थी।

वहीं, ब्रेकर की बात तब सामने आई जब पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की फुटेज खंगाली। युवक के परिजनों का आरोप है कि ब्रेकर सोसायटी आरडब्ल्यूए ने बनवाया था। मृतक के साले सुमित कुमार का कहना है कि मामले में वह लोग केवल इतना जानना चाहते थे कि यह ब्रेकर किसके कहने पर किसने बनवाया और क्या यह मानकों के मुताबिक बनाया गया था। उन्होंने बताया कि पहले पुलिस और निगम अधिकारी से मौखिक शिकायत करने के बावजूद जब कोई जवाब नहीं मिला तो उन्होंने 10 जुलाई को आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई थी।

शिकायत में उन्होंने केवल यही सूचना उपलब्ध कराने की मांग की थी कि किसने ब्रेकर बनवाया और हादसे के अगले ही दिन यह ब्रेकर क्यों हटा दिया गया। ब्रेकर बना भी तो यहां कोई शाइनबोर्ड क्यों नहीं लगाया गया था। सुमित का कहना है कि उनके सवालों के जवाब में पोर्टल पर निगम की तरफ से जवाब मिला कि इन सवालों के जवाब यहां नहीं दिए जा सकते। सुमित का कहना है कि उन्होंने ऐसा कोई सवाल नहीं किया था जिसका जवाब देने पर राष्ट्र की सुरक्षा का कोई अहित होता या फिर कोई बड़ी परेशानी खड़ी की जाती। उनका कहना है कि यदि जवाब नहीं देना है तो इस तरह के पोर्टल का क्या औचित्य रह जाता है।

नगर आयुक्त से भी नहीं मिलने दिया गया

मृतक के साले सुमित कुमार का आरोप है कि इस संबंध में वह दो से तीन बार नगर आयुक्त से भी शिकायत करने निगम मुख्यालय पहुंचे लेकिन वहां किसी ने उन्हें मिलने नहीं दिया गया। कभी नगर आयुक्त के मीटिंग में होने तो कभी निरीक्षण पर होने की बात बता कर टहला दिया गया।

104 किलो गांजा और आईसर डीसीएम के साथ एक गिरफ्तार

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। बन्धुआकला थाना पुलिस और एसटीएफ लखनऊ की संयुक्त टीम ने शनिवार को 104 किलोग्राम अवैध गांजे के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया। पुलिस के अनुसार कार्रवाई लखनऊ-सुलतानपुर हाईवे पर डेरा बसी ढाबा के सामने की गई।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान विजय पाल (37) पुत्र रामकिसन निवासी नियाजपुर भदार, थाना हैदरगंज, अयोध्या के रूप में हुई है। पुलिस ने उसके कब्जे से तीन बोरियों में टेप किए गए 52 पैकेटों में रखा 104 किलोग्राम गांजा बरामद किया। गांजे के परिवहन में प्रयुक्त छह टायरा आईसर डीसीएम वाहन (यूपी 42 सीटी 7793) को भी कब्जे में लिया गया। इसके अलावा आरोपी के पास से आधार कार्ड, पैन कार्ड, ड्राइविंग लाइसेंस और वीवो मोबाइल फोन बरामद हुआ।

पुलिस ने बरामदगी के आधार पर थाना बन्धुआकला एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार आरोपी के विरुद्ध रायबरेली के डलमऊ थाने में गैंगस्टर एक्ट और एनडीपीएस एक्ट समेत मैनपुरी कोतवाली में धोखाधड़ी का मुकदमा भी दर्ज है। सीओ सिटी राघवेंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया,जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

मंदिर में चोरी करने वाले तीन शातिर चोर गिरफ्तार, चोरी की धातु और नकदी बरामद

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ की पूर्वी जोन सर्विलांस टीम और थाना चिनहट पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में मंदिर में चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले तीन शातिर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने उनके कब्जे से मंदिर से चोरी किए गए सफेद धातु के टुकड़े तथा 5,020 रुपये नकद बरामद किए हैं।लिस के अनुसार, 10 जुलाई 2026 को स्पनेश्वर महादेव मंदिर, विकल्पखंड-2, चिनहट के कोषाध्यक्ष वीरेंद्र सिंह ने अज्ञात व्यक्तियों के विरुद्ध मंदिर के अरघा और दानपात्र से नकदी चोरी किए जाने की शिकायत दर्ज कराई थी। इस संबंध में थाना चिनहट पर मुकदमा संख्या 369/2026 धारा 305ए बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया गया था।घटना के खुलासे के लिए गठित पुलिस टीम ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज और अन्य इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों का विश्लेषण किया। जांच के आधार पर शनिवार को एमिटी यूनिवर्सिटी पुल के नीचे से तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया।गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान गोपाल चौहान (20 वर्ष), नितिन तिवारी (19 वर्ष) और पंकज शुक्ला (21 वर्ष) के रूप में हुई है। तीनों वर्तमान में चिनहट क्षेत्र में रह रहे थे और उनके मूल निवास क्रमशः बिहार के गोपालगंज, बहराइच और सीतापुर जनपद हैं।पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से मंदिर से चोरी किए गए सफेद धातु के टुकड़े तथा 5,020 रुपये नकद बरामद किए हैं। बरामदगी के आधार पर मुकदमे में धारा 317(2) एवं 331(4) बीएनएस की बढ़ोतरी की गई है।जांच में यह भी सामने आया है कि गिरफ्तार अभियुक्त पंकज शुक्ला के विरुद्ध चिनहट थाने में लूट, चोरी, गैंगस्टर एक्ट सहित छह आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं।

'सैफई सिंडिकेट खा जाता था युवाओं की नौकरी', योगी बोले- चाचा और भतीजे की जोड़ी करती थी वसूली

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को फतेहाबाद रोड स्थित टाटा मैदान में आयोजित जनसभा में पूर्ववर्ती समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस की सरकारों पर तीखा हमला बोला। 53 विकास परियोजनाओं के लोकार्पण और शिलान्यास समारोह को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले विकास का पैसा सैफई सिंडिकेट लूट लेता था। युवाओं की नौकरियां सैफई खा जाता था और चाचा-भतीजे की जोड़ी वसूली करती थी।

उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि जो मुख्यमंत्री दोपहर 12 बजे सोकर उठते हों, दो बजे सजकर निकलते हों और शाम सात बजे बाद अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती में व्यस्त हो जाता हो, वे क्या विकास करेंगे? आज

डबल इंजन की सरकार में बिना किसी भेदभाव के लाखों नौजवानों को सरकारी नौकरियां मिल रही हैं और ताजनगरी में विकास कार्य बुलेट ट्रेन की रफ्तार से आगे बढ़ रहे हैं।

आक्रमणकारियों के नाम पर नहीं बनेगा म्यूजियम

मुख्यमंत्री ने कहा कि सपा सरकार की मानसिकता गुलामी वाली थी, इसलिए वे मुगलों और आक्रमणकारियों के नाम पर म्यूजियम बना रहे थे। हमारी सरकार ने तय किया कि म्यूजियम किसी आक्रमणकारी के नाम पर नहीं, बल्कि भारत के राष्ट्रनायकों के नाम पर बनेगा। आगरा में छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम पर बन रहे भव्य म्यूजियम का निर्माण कार्य इस वर्ष के अंत तक पूरा कर लिया जाएगा। इसके साथ ही कैलाश मंदिर और गुरु का ताल के विकास कार्यों को भी सहमति दी गई है। महिलाओं की सुविधा के लिए 500 क्षमता वाले एक

श्रमजीवी हॉस्टल के निर्माण को भी राज्य सरकार ने स्वीकृति दे दी है, जिसका बजट भी जारी हो चुका है।

इंटरनेशनल एयरपोर्ट की दिशा में बढ़े कदम

सीएम योगी ने आगरा के विकास का खाका खींचते हुए बताया कि आगरा एयरपोर्ट को इंटरनेशनल एयरपोर्ट बनाने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं। किसानों की आय बढ़ाने के लिए आगरा में इंटरनेशनल पोटैटो (आलू) सेंटर को जमीन उपलब्ध कराई गई है और इसने सफलतापूर्वक काम करना भी शुरू कर दिया है। इसके अलावा 400 से अधिक औद्योगिक इकाइयों से जुड़ीं जो फाइलें लंबे समय से लंबित थीं, उन्हें भी स्वीकृति दे दी गई है। उन्होंने कहा कि माननीय उच्चतम न्यायालय की मंशा के अनुरूप आगरा के विकास को एक फ्यूचर सिटी के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है।

पहले योजनाओं में होती थी छीना-झपटी

विपक्ष पर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले गरीबों की योजनाओं में छीना-झपटी होती थी। बेटियों और व्यापारियों की सुरक्षा खतरे में रहती थी। कांग्रेस और सपा के शासन में यह सब पाप होता था। बेटियां और व्यापारी असुरक्षित थे, लेकिन आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में बिना किसी भेदभाव के काम हो रहा है। आगरा की जनता ने 2022 और 2024 में डबल इंजन की सरकार को जो आशीर्वाद दिया है, उसी का परिणाम है कि आज आगरा की तस्वीर बदल रही है। कार्यक्रम में आगरा के सांसद और केंद्रीय मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल, प्रभारी एवं एमएसएमई मंत्री भूपेंद्र चौधरी, उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय, कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य समेत कई अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

बिजली बिल जमा करने वाले उपभोक्ताओं को किसी भी कीमत पर परेशानी नहीं होनी चाहिए : ए.के. शर्मा

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने शनिवार को लखनऊ के संगम सभागार में विद्युत विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर कड़ा असंतोष जताते हुए कहा कि विभाग में लापरवाही, ढिलाई और जवाबदेही से बचने की प्रवृत्ति किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने चेतावनी दी कि जनता की समस्याओं की अनदेखी करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।बैठक में ऊर्जा मंत्री ने खराब ट्रांसफार्मरों को बदलने में हो रही देरी पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि उपभोक्ताओं को लंबे समय तक बिजली संकट का सामना नहीं करना पड़ना चाहिए। उन्होंने ट्रांसफार्मर बदलने और उनकी मरम्मत की व्यवस्था को समयबद्ध

बनाने के निर्देश दिए। साथ ही वर्कशॉप में ट्रांसफार्मरों की मरम्मत से जुड़ी लंबित मामलों की समीक्षा कर उनमें तत्काल सुधार करने को कहा।विद्युत दुर्घटनाओं पर चिंता जताते हुए ए.के. शर्मा ने कहा कि कई मामलों में निचले स्तर के अधिकारी नियमित निरीक्षण नहीं करते और घटनाओं का समय पर संज्ञान नहीं लेते। उन्होंने इसे अस्वीकार्य बताते हुए निदेशक (तकनीकी) को निर्देश दिए कि जब तक संबंधित कर्मचारी सभी सुरक्षा उपकरण पहनना सुनिश्चित न कर लें, तब तक किसी भी स्थिति में शटडाउन न दिया जाए। उन्होंने कहा कि सुरक्षा मानकों से किसी प्रकार का समझौता स्वीकार नहीं होगा।ऊर्जा मंत्री ने लोड वृद्धि, बिलिंग संबंधी समस्याओं और ट्रांसफार्मर मरम्मत की लंबित स्थिति की समीक्षा करते हुए कहा कि ट्रांसफार्मर की क्षमता वृद्धि को लाइन लॉस से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। जहां आवश्यकता हो, वहां उपभोक्ताओं को बेहतर बिजली आपूर्ति के लिए क्षमता वृद्धि तत्काल की जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा कि नियमित रूप से बिजली बिल का भुगतान करने वाले ईमानदार उपभोक्ताओं को बकायेदारों के कारण किसी प्रकार की परेशानी नहीं होनी चाहिए।बैठक में ए.के. शर्मा ने बलिया में हाल ही में हुई विद्युत दुर्घटना में जनहानि पर शोक व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताई। उन्होंने प्रत्येक दुर्घटना की गंभीरता से जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों की जवाबदेही तय करने और आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।आगामी सावन मास और कांवड़ यात्रा को देखते हुए ऊर्जा मंत्री ने सभी विद्युत वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के प्रबंध निदेशकों को आवश्यक तैयारियां समय से पूरी करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से स्वयं कांवड़ मार्गों का निरीक्षण करने, विद्युत पोलों पर आवश्यक रैपिंग कराने तथा बिजली के तारों के नीचे किसी भी प्रकार के शिविर या पंडाल न लगने देने को कहा।

पीसीएस-2025 मुख्य परीक्षा का परिणाम अगस्त अंत या सितंबर के पहले सप्ताह में संभावित

लखनऊ। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपीपीएससी) की पीसीएस-2025 मुख्य परीक्षा का परिणाम अगस्त के अंतिम सप्ताह या सितंबर के प्रथम सप्ताह में जारी होने की संभावना है। परिणाम को लेकर अभ्यर्थियों में लंबे समय से इंतजार बना हुआ है।पीसीएस-2025 की प्रारंभिक परीक्षा 12 अक्टूबर 2025 को आयोजित की गई थी। परीक्षा के लिए कुल 6,26,387 अभ्यर्थियों ने पंजीकरण कराया था, जिनमें से 2,67,340 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए थे।मुख्य परीक्षा का आयोजन 29 मार्च से 1 अप्रैल 2026 तक किया गया। मुख्य परीक्षा के लिए 11,406 अभ्यर्थी पंजीकृत थे, जबकि 9,946 अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी।इस भर्ती अभियान के तहत कुल 814 पदों पर नियुक्तियां की जानी हैं। इनमें सामान्य वर्ग के 371, अनुसूचित जाति के 163, अनुसूचित जनजाति के 22, अन्य पिछड़ा वर्ग के 191 तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग (ईडब्ल्यूएस) के 67 पद आरक्षित हैं।

मायावती ने नीट विवाद और छात्र आंदोलन के राजनीतिकरण पर जताई चिंता

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने नीट-यूजी सहित विभिन्न परीक्षाओं में पेपर लीक की घटनाओं और इसके बाद छात्रों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं पर गहरी चिंता व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर 'सीजेपी' के बैनर तले चल रहे छात्रों और युवाओं के शांतिपूर्ण धरने को व्यापक जनसमर्थन मिल रहा है, लेकिन इस मुद्दे पर सरकार और विपक्ष के बीच तेज राजनीतिक टकराव के कारण शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार का मूल मुद्दा पीछे छूटता दिखाई दे रहा है।मायावती ने कहा कि केंद्रीय शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग को लेकर सरकार और विपक्ष के बीच राजनीति तेज हो गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्षी दल इस मुद्दे को सड़क से लेकर संसद तक भुनाने की होड़ में

हैं, जिससे तनाव और टकराव की स्थिति पैदा हो रही है। उन्होंने अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं से ऐसे माहौल में सतर्क और संयमित रहने की अपील की।बसपा प्रमुख ने कहा कि छात्र आंदोलन के पूरी तरह राजनीतिकरण और जंतर-मंतर पर आंदोलनकारियों के खिलाफ पुलिस कार्रवाई से हालात और अधिक गंभीर हो गए हैं। उनका कहना है कि इसी तनावपूर्ण माहौल के कारण संसद का वर्तमान मानसून सत्र अब तक सुचारु रूप से नहीं चल सका है, जिससे जनहित से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर सरकार की जवाबदेही प्रभावित हुई है।मायावती ने यह भी कहा कि सरकार की कार्रवाई पेपर लीक होने के बाद की सख्त कार्रवाई तक सीमित दिखाई देती है, जबकि ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए प्रभावी और स्थायी उपाय नहीं किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार और अयोग्यता के कारण होने वाले पेपर लीक पर अंकुश लगाने के लिए ठोस व्यवस्था आवश्यक है।

कठौता झील पर चला विशेष स्वच्छता अभियान, 'एक पेड़ माँ के नाम' के तहत हुआ पौधारोपण

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। नगर निगम लखनऊ के सहयोग से शनिवार को कठौता झील परिसर में विशेष स्वच्छता एवं जनजागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान का उद्देश्य स्वच्छता के साथ पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और नागरिकों को स्वच्छ एवं हरित लखनऊ के निर्माण में सहभागी बनाना रहा।अभियान का नेतृत्व चिनहट द्वितीय वार्ड के पार्षद शैलेंद्र वर्मा ने किया, जबकि इसकी अध्यक्षता लखनऊ स्वच्छता अभियान के क्षेत्रीय निदेशक अभय रंजन ने की।अभियान के दौरान नगर निगम की टीम ने कठौता झील के आसपास व्यापक सफाई अभियान चलाया। इस दौरान सड़क की सफाई, जंगली घास की कटाई, नालों की सफाई तथा आवागमन में बाधा बन रही पेड़ों की डालियों की छंटाई कराई गई। करीब एक किलोमीटर क्षेत्र में सड़क के दोनों ओर विशेष सफाई अभियान चलाकर क्षेत्र की स्वच्छता, सौंदर्यीकरण और नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाया गया।इस अवसर पर ₹एक पेड़ माँ के नाम₹ अभियान के तहत पौधारोपण भी किया गया। जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और स्थानीय नागरिकों ने पौधे लगाकर उनके संरक्षण का संकल्प लिया तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। अभियान के माध्यम से स्वच्छता और हरियाली को जनआंदोलन बनाने का संदेश दिया गया।कार्यक्रम में सफाई एवं खाद्य निरीक्षक राकेश कुमार, पूर्व महाप्रबंधक (जलकल) एस.के. वर्मा, नगर निगम की टीम, लखनऊ स्वच्छता अभियान, सुदीक्षा फाउंडेशन के सदस्य तथा बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिकों ने श्रमदान कर सक्रिय भागीदारी निभाई।

आउटसोर्स कर्मचारियों की मांगों पर जांच कर रिपोर्ट देने के निर्देश

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने आउटसोर्स/संविदा कर्मचारियों की लंबित मांगों और शिकायतों के संबंध में मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (एमवीवीएनएल) को जांच कर शीघ्र निस्तारण रिपोर्ट उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं।यूपीपीसीएल के महाप्रबंधक (औद्योगिक संबंध) प्रदीप कुमार की ओर से जारी पत्र में कहा गया है कि इस संबंध में पूर्व में 2 दिसंबर 2025 को भी दो पत्र भेजकर उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन निविदा/संविदा कर्मचारी संघ की शिकायतों पर निस्तारण आख्या मांगी गई थी, लेकिन अब तक रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है।पत्र के अनुसार, 2 जुलाई 2026 को कर्मचारी संघ के साथ हुई वार्ता तथा 14 जुलाई 2026 को जारी वार्ता विवरण के बिंदु संख्या-9 के तहत प्रबंध निदेशक द्वारा मामले का परीक्षण कर आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए थे।

47 लाख बिजली उपभोक्ताओं के भार परिवर्तन की जांच की मांग

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय (पूर्व मंत्री) ने उत्तर प्रदेश विद्युत नियामक आयोग के अध्यक्ष को पत्र लिखकर प्रदेश के लगभग 47 लाख बिजली उपभोक्ताओं के स्वीकृत विद्युत भार में किए गए व्यापक बदलाव, स्मार्ट मीटर आधारित प्रक्रियाओं और नेट मीटरिंग से जुड़ी व्यावहारिक समस्याओं की स्वतंत्र जांच कराने की मांग की है।अजय राय ने पत्र में कहा कि स्वीकृत विद्युत भार में बदलाव, स्मार्ट मीटर आधारित प्रक्रियाओं और नेट मीटरिंग संबंधी कमियों के कारण बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त स्थायी प्रभार, सुरक्षा जमा और अन्य वित्तीय देनदारियां डाली जा रही हैं। उनका आरोप है कि इससे बिजली वितरण कंपनियां उपभोक्ताओं से आर्थिक उगाही का माध्यम बना रही हैं। उन्होंने कहा कि यदि इन प्रक्रियाओं का स्वतंत्र परीक्षण नहीं कराया गया तो उपभोक्ताओं के आर्थिक और वैधानिक अधिकार प्रभावित होते रहेंगे।उन्होंने कहा कि यह समस्या केवल घरेलू उपभोक्ताओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उद्योग, व्यापार, शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, पत्रकारों, अधिवक्ताओं, सरकारी एवं गैर-सरकारी कर्मचारियों, लघु उद्यमियों, सेवा क्षेत्र और स्वयं विद्युत विभाग के कर्मचारियों को भी प्रभावित कर रही है। उनका कहना है कि बढ़ी हुई लागत का बोझ अंततः गरीब, निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोगों पर पड़ेगा।कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने आयोग से मांग की है कि पूरे प्रकरण की स्वतंत्र तकनीकी, वित्तीय और नियामकीय जांच कराई जाए। साथ ही स्मार्ट मीटरों की कार्यप्रणाली, एल्गोरिद्मिक निर्णय प्रक्रिया और विद्युत भार निर्धारण के आधारों को सार्वजनिक परीक्षण के दायरे में लाया जाए। उन्होंने नेट मीटरिंग व्यवस्था की कमियों को दूर करने तथा जिन उपभोक्ताओं से विधिसम्मत प्रक्रिया के बिना अतिरिक्त राशि वसूली गई।

○ संक्षेप ○

लखनऊ अग्निकांड के 32 दिन बाद अवैध इमारत पर चला बुलडोजर, 15 मौतों वाली बिल्डिंग ढहाने की कार्रवाई शुरू

लखनऊ। अलीगंज अग्निकांड में 15 लोगों की मौत के 32 दिन बाद शनिवार को लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) ने अवैध चार मंजिला इमारत को ध्वस्त करने की कार्रवाई शुरू कर दी। सुबह करीब 7:30 बजे एलडीए के 45 अधिकारी और कर्मचारी तीन बुलडोजर व एक हाइड्रोलिक मशीन के साथ मौके पर पहुंचे। कार्रवाई के दौरान आसपास की सड़कों पर बैरिकेडिंग कर यातायात रोक दिया गया और सुरक्षा व्यवस्था के लिए 100 से अधिक पुलिसकर्मी तैनात किए गए। एलडीए के अनुसार, पूरी इमारत को जमींदोज करने में पूरे दिन का समय लग सकता है। ध्वस्तीकरण के दौरान भवन मालिक वीरेंद्र शुक्ला के अधिवक्ता राजेंद्र शुक्ला मौके पर पहुंचे और कार्रवाई पर आपत्ति जताई। उनका कहना था कि एलडीए ने 25 जुलाई तक का समय दिया था, लेकिन उसी दिन बिना अलग ध्वस्तीकरण आदेश जारी किए कार्रवाई शुरू कर दी गई। उन्होंने कहा कि इस कार्रवाई को अदालत में चुनौती दी जाएगी। गौरतलब है कि 22 जून को इस इमारत की दूसरी मंजिल पर संचालित एनिमेशन कोचिंग सेंटर में भीषण आग लगने से 15 लोगों की जलकर मौत हो गई थी। हादसे में पांच लोगों ने पाइप और तारों के सहारे नीचे उतरकर जान बचाई थी, जबकि एक युवक दूसरी मंजिल से कूद गया था, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जांच में सामने आया था कि आवासीय उपयोग के लिए स्वीकृत भवन का व्यावसायिक इस्तेमाल किया जा रहा था और निर्माण भी नियमों के विपरीत था। इसके बाद एलडीए ने भवन मालिक को नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। 10 जुलाई को ध्वस्तीकरण का आदेश जारी करते हुए 15 दिन के भीतर स्वयं इमारत गिराने के निर्देश दिए गए थे। निर्धारित समयसीमा समाप्त होने के बाद एलडीए ने शनिवार को स्वयं बुलडोजर चलाकर कार्रवाई शुरू कर दी।

पशुपालकों के लिए बड़ी सौगात, CM पशुधन बीमा योजना में मिलेगी 85% सब्सिडी ; 10 लाख पशुओं के इंश्योरेंस का टारगेट

लखनऊ। मुख्यमंत्री जोखिम प्रबंधन एवं पशुधन बीमा योजना के तहत प्रदेश में 10 लाख पशुओं का बीमा कराया जाएगा। पिछले दिनों इस योजना को कैबिनेट ने स्वीकृति दी थी। अब बीमा का लक्ष्य तय कर दिशा-निर्देश जारी कर दिए गए हैं। योजना के तहत पशुपालकों को उनके निजी पशु चिकित्सालयों में बीमा कराने की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। बीमा के लिए प्रीमियम का 85 प्रतिशत हिस्सा राज्य सरकार वहन करेगी, जबकि पशुपालकों को केवल 15 प्रतिशत राशि देनी होगी। योजना के तहत सभी 75 जिलों में पशुओं का बीमा कराया जाएगा। पहले चरण में योजना की सामान्य श्रेणी में आठ लाख और एससीएसपी (अनुसूचित जाति) श्रेणी में दो लाख पशुओं को बीमा सुरक्षा देने का लक्ष्य है। योजना का उद्देश्य पशुओं की मृत्यु या स्थायी विकलांगता की स्थिति में पशुपालकों को आर्थिक सुरक्षा देना है। बीमा के लिए पशुपालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय में आवेदन करेंगे। पशु का स्वास्थ्य परीक्षण, मूल्यांकन और यूनिक ईयर टैग लगाने के बाद बीमा कंपनी मोबाइल एप के जरिए फोटो अपलोड कर पालिसी जारी करेगी। पशु का मूल्य उसकी नस्ल, स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन और अन्य मानकों के आधार पर तय किया जाएगा। 50 हजार रुपये के अनुमानित मूल्य वाले पशु के लिए एक वर्ष का औसत प्रीमियम 2,250 रुपये निर्धारित किया गया है। इसमें 1,913 रुपये सरकार और केवल 337 रुपये पशुपालक को देने होंगे। दो वर्ष के बीमा पर लाभार्थी का अंश 600 रुपये और तीन वर्ष के बीमा पर 825 रुपये रहेगा। सरकार ने भूमिहीन, लघु एवं सीमांत किसानों, महिला पशुपालकों, बीपीएल, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लाभार्थियों को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया है। पशु की मृत्यु पर दावा राशि सीधे लाभार्थी के खाते में भेजी जाएगी, जबकि स्थायी विकलांगता के मामलों में बीमित राशि का 75 प्रतिशत तक भुगतान किया जाएगा।

बीबीएयू में राष्ट्रीय मीडिया कार्यशाला आयोजित, जिम्मेदार पत्रकारिता और फैक्ट-चेकिंग पर दिया गया जोर

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। । बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (बीबीएयू) के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग तथा अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को राष्ट्रीय स्तर की मीडिया कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मीडिया की बदलती भूमिका, डिजिटल पत्रकारिता, फैक्ट-चेकिंग और राष्ट्र निर्माण में मीडिया की जिम्मेदारी जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ पत्रकार एवं डीडी न्यूज के एडिटर और संवाददाता अशोक श्रीवास्तव मौजूद रहे। कार्यक्रम में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. एन.एल. गुप्ता, महासचिव प्रो. गीता भट्ट, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. गोविंद जी. पाण्डेय तथा महासंघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री महेन्द्र कपूर भी उपस्थित रहे। कार्यशाला के आयोजन में प्रो. संजय के. द्विवेदी का विशेष सहयोग रहा।कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन, मां सरस्वती एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुआ। सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय कुलगीत के बाद अतिथियों का पुष्पगुच्छ, पौधा एवं शॉल भेंट कर स्वागत किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. गोविंद जी. पाण्डेय ने कार्यशाला की रूपरेखा और उद्देश्य प्रस्तुत किए।राष्ट्र निर्माण में मीडिया की अहम भूमिका : कुलपति,कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल ने कहा कि विकसित भारत के निर्माण के लिए आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त समाज का निर्माण भी आवश्यक है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि उन्हें सकारात्मक सोच और नैतिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ाना सभी की जिम्मेदारी है।उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है और आज के सूचना युग में किसी भी समाचार या जानकारी को साझा करने से पहले उसका तथ्यात्मक सत्यापन करना आवश्यक है, ताकि फर्जी खबरों और भ्रामक नैरेटिव से बचा जा सके।

जेन-ज़ी को 'जेन-वी' बनने की जरूरत : अशोक श्रीवास्तव

मुख्य अतिथि अशोक श्रीवास्तव ने कहा कि भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए नई पीढ़ी, विशेषकर जेन-ज़ी की सोच और कार्यशैली को समझना होगा। उन्होंने युवाओं को केवल ₹जेन-ज़ी₹ नहीं बल्कि ₹जेन-वी₹ (विजन वाली पीढ़ी) बनने का संदेश देते हुए कहा कि दूरदृष्टि रखने वाली युवा पीढ़ी ही देश के विकास में निर्णायक भूमिका निभा सकती है।उन्होंने अपने पत्रकारिता अनुभव साझा करते हुए कहा कि डिजिटल युग में निरंतर स्वयं को अपडेट रखना आवश्यक है। आधुनिक तकनीक और डिजिटल माध्यमों का उपयोग सकारात्मक, तथ्यपरक और प्रभावी संवाद स्थापित करने के लिए किया जाना चाहिए।भारतीय ज्ञान परंपरा और गुणवत्ता आधारित शिक्षा पर जोरअखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. एन.एल. गुप्ता ने संगठन के उद्देश्यों और राष्ट्र निर्माण में उसकी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महासंघ शिक्षा के भारतीयकरण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, शिक्षकों के विकास और भारतीय ज्ञान परंपरा को बढ़ावा देने के लिए लगातार कार्य कर रहा है।महासचिव प्रो. गीता भट्ट ने कहा कि मीडिया समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रभावी माध्यम है। उन्होंने शिक्षा, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्र निर्माण के लिए मीडिया और शैक्षिक संगठनों के बीच बेहतर समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया।मीडिया नैरेटिव, मोबाइल पत्रकारिता और डिजिटल कंटेंट पर तकनीकी सत्रकार्यशाला के तकनीकी सत्र में अशोक श्रीवास्तव ने मीडिया नैरेटिव के समाज पर प्रभाव और फैक्ट-चेकिंग की आवश्यकता पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि किसी भी सूचना को साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच करना जिम्मेदार पत्रकारिता की पहली शर्त है।दूसरे सत्र में रील्स निर्माण, मोबाइल पत्रकारिता एवं वीडियो ऑप्टिमाइजेशन, डिजिटल युग में प्रिंट मीडिया की प्रासंगिकता और प्रभावशाली कंटेंट निर्माण जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए।

सारनाथ यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल, उत्तर प्रदेश की बौद्ध विरासत को मिली वैश्विक पहचान

लखनऊ। लगभग 28 वर्षों के लंबे इंतजार के बाद भगवान बुद्ध की प्रथम धर्मदेशना स्थली सारनाथ को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में स्थान मिल गया है। इसके साथ ही सारनाथ भारत का 45वां और उत्तर प्रदेश का चौथा विश्व धरोहर स्थल बन गया है। दक्षिण कोरिया के बुसान शहर में आयोजित यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति के 48वें सत्र में शनिवार को यह ऐतिहासिक घोषणा की गई। इस उपलब्धि के साथ बौद्ध धर्म के सबसे पवित्र स्थलों में शामिल सारनाथ को वैश्विक विरासत के सर्वोच्च मंच पर नई पहचान मिली है। वहीं, उत्तर प्रदेश के बौद्ध सर्किट को अंतरराष्ट्रीय पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के मानचित्र पर नई मजबूती मिलने की उम्मीद है। सारनाथ को 03 जुलाई 1998 को यूनेस्को की टेंटेटिव लिस्ट (संभावित सूची) में शामिल किया गया था। लगभग 28 वर्षों बाद मिली यह मान्यता उत्तर प्रदेश के लिए भी विशेष महत्व रखती है।

जंतर-मंतर: आग अभी बुझी नहीं है

लुटियन दिल्ली को सोमवार को जिस छात्र आंदोलन ने झकझोरा था, उसकी आग अब भी बुझी नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि अब इस आंदोलन को सबसे अधिक ऊर्जा जेनरेशन-ज़ेड का रचनात्मक हास्य है। गुस्सा है, लेकिन उसके साथ व्यंग्य है, मीम हैं, तख्तियों पर लिखी चुटीली पंक्तियाँ हैं और व्यवस्था को चुनौती देने का एक नया आत्मविश्वास भी। राहुल गांधी की हिरासत के एक दिन बाद बुधवार को दिल्ली के संसद इलाके का माहौल तनावपूर्ण था, लेकिन वजह बदल चुकी थी। सरकार के लिए यह घेराबंदी का एक और दिन था। वही छात्रों के लिए आंदोलन का एक और सामान्य दिन—जोश, धैर्य और जिद से भरा हुआ।

लुटियंस दिल्ली अब भी एक ऐसे शहर की तस्वीर है, जो किसी बड़े टकराव की आशंका में खुद को किले में बदला हुआ है। प्रधानमंत्री आवास से संसद की ओर जाने वाली सड़कें बैरिकेडिंग की कई परतों के पीछे गुम थीं। पश्चिम बंगाल और कश्मीर से भी अतिरिक्त सुरक्षा बल बुलाए गए है। राजधानी की परिचित हरियाली पर मानों नीले और खाकी रंग का कब्ज़ा। दिल्ली पुलिस, रैपिड एक्शन फोर्स, सीआरपीएफ, दंगा-रोधी वाहन, अश्रु गैस, धुआँ छोड़ने वाले लॉन्चर और लाठियाँ थामे जवान हर चौराहे पर मौजूद। मानो पूरा सत्ता क्षेत्र एक ही संदेश दे रहा हो—राज्य किसी भी स्थिति के लिए तैयार है। सुबह से खान मार्केट, जोर बाग और इंद्रप्रस्थ सहित सोलह मेट्रो स्टेशन बंद थे। लेकिन इन सबका छात्रों पर कोई खास असर नहीं दिखाई दिया। वे लगातार बसों, मेट्रो के खुले स्टेशनों और ऑटो से जंतर-मंतर पहुँचते रहे। आज जब मैं आंदोलन के केंद्र जंतर-मंतर पहुँची तो मंच पर अभिजीत दिपके मौजूद थे। उनके आसपास मीडिया का घना घेरा था। उसी घेरे में समर्थन देने आने वाले राजनीतिक नेताओं की आवाजाही भी लगी हुई थी। लेकिन असली आंदोलन उस घेरे के बाहर था। उमस से भरे आसमान के नीचे सैकड़ों छात्र ज़मीन पर पालथी मारकर बैठे थे। कोई नारे लगा रहा था, कोई गीत गा रहा था, कोई हाथ से बने पोस्टर लहरा रहा था और कोई अपने साथियों का हौसला बढ़ा रहा था। आज मेरी मुलाकात कई ऐसे छात्रों से हुई जो पहली बार किसी प्रदर्शन में शामिल हुए थे। इंदौर से आए तीन युवक पूरी रात यात्रा करके बुधवार तड़के दिल्ली पहुँचे थे। उन्हें किसी संगठन ने नहीं बुलाया था। वे सोशल मीडिया पर आंदोलन के वीडियो देखकर यहाँ आए थे।

हम इसलिए आए क्योंकि लगा कि दूसरे छात्रों के साथ खड़ा होना चाहिए, उनमें से एक ने मुझसे कहा। सिर्फ एकजुटता दिखाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि व्यवस्था को कोई तो ठीक करने की कोशिश करे। फिर उसने एक ऐसी बात कही जिसने शायद पूरे आंदोलन का सबसे सटीक अर्थ सामने रख दिया। जब मैंने पूछा कि पेपर लीक तो वर्षों से होते आए हैं, फिर यह आंदोलन अलग क्यों है, तो उसने बिना एक पल रुके कहा, पिछली पीढ़ी ने इसे स्वीकार कर लिया था। उन्हें कभी लगा ही नहीं कि गलत को गलत कहकर बदला भी जा सकता है। अगर उन्होंने तब सवाल पूछे होते, तो शायद आज हमें यहाँ खड़ा नहीं होना पड़ता। उसके इतना कहते ही आसपास बैठे छात्रों ने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं। उस एक संवाद ने वह बात समझा दी जिसे आँकड़े कभी नहीं समझा सकते। इस आंदोलन की ताकत सिर्फ इसकी संख्या में नहीं, बल्कि उस स्पष्टता में है जिसके साथ नई पीढ़ी अपने गुस्से को शब्द देती हुई है। अगर सोमवार ने इस आंदोलन के जन्म की घोषणा की थी, तो बुधवार ने साबित कर दिया कि उसमें टिके रहने की क्षमता भी है।

बुधवार तक आते-आते यह आंदोलन अपना अलग जीवन जीने लगा है। यह अब सिर्फ एक प्रदर्शन नहीं रहा, बल्कि एक ऐसा समुदाय बन चुका है जहाँ असहमति केवल नारों से नहीं, व्यंग्य और हास्य से भी व्यक्त हो रही है। भीड़ में हँसी उतनी ही सहजता से फैल रही थी जितनी नारेबाज़ी। अनजान लोग एक-दूसरे का ख़याल रख रहे थे। और सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि लगभग पूरा प्रबंधन स्वयं छात्रों के हाथ में था। दस-दस, बारह-बारह छात्रों के छोटे समूह बारिश से भीगी सड़कों पर अपनी जगह बनाए बैठे थे। कोई रातभर सफर करके आया था और योगा मैट पर थोड़ी देर के लिए सो गया था। कोई किताब पढ़ रहा था। कहीं आंदोलन के गीत गूँज रहे थे। कहीं संविधान पर बहस चल रही थी। कहीं कोई अचानक खड़ा होकर भाषण देने लगा था। और कहीं अनजान लोग एक-दूसरे के साथ बिस्कुट और पानी बाँट रहे थे। नारों के बीच-बीच में ठहाके लगातार सुनाई देते रहे। सबसे अधिक प्रभावित करने वाली बात उनका अनुशासन था। स्वयंसेवकों ने मानव श्रृंखलाएँ बनाकर आने-जाने के रास्ते खुले रखे। कुछ लोग पानी बाँट रहे थे। कुछ नए आने वालों को छाँव की ओर भेज रहे थे। कुछ थके हुए प्रदर्शनकारियों को गत्ते के टुकड़ों से हवा कर रहे थे, क्योंकि दिल्ली की उमस किसी की परीक्षा लेने में कोई कसर नहीं छोड़ रही थी। मेरे लिए ऐसे दिन में घूमना, रिपोर्टिंग करना खुद बेहद थका देने वाला अनुभव था। लेकिन छात्रों ने मानो तय कर लिया है कि न मौसम और न थकान—उनके रास्ते की कुछ भी नई बाधा नहीं बनेगा।

देर से आए और दुरुस्त भी नहीं हैं!

एक साल के अंतराल पर यह दूसरी बार हुआ था। इससे पहले 2024 की नीट यूजी परीक्षा में भी पेपर लीक से लेकर परीक्षा केंद्र मैनेज होने की खबरें आई थीं।

अजीत द्विवेदी

कांग्रेस ने छात्रों के मुद्दे पर प्रदर्शन करने में बहुत देरी कर दी। अगर राहुल गांधी 17 जून की अपनी कोटा यात्रा के बाद इस अभियान को जारी रखते तो उनके सामने साख का सवाल नहीं खड़ा होता और न यह आरोप लगता कि वे कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन को हाईजैक करने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि जून में भी कांग्रेस ने प्रदर्शन शुरू करने में बहुत देर कर दी थी। तीन मई को नीट यूजी की परीक्षा हुई थी और सात मई को पेपर लीक की खबर आ गई थी।

एक साल के अंतराल पर यह दूसरी बार हुआ था। इससे पहले 2024 की नीट यूजी परीक्षा में भी पेपर लीक से लेकर परीक्षा केंद्र मैनेज होने की खबरें आई थीं। उस समय पूरी परीक्षा तो रद्द नहीं हुई थी लेकिन सुप्रीम कोर्ट को दखल देना पड़ा था और कई केंद्रों पर दोबारा परीक्षा हुई थी। 2024 की परीक्षा में 24 लाख छात्र शामिल हुए थे।

तभी एक साल के अंतराल पर फिर नीट यूजी की परीक्षा के पेपर लीक होने के बाद छात्रों और युवाओं का उद्वेलित होना स्वाभाविक था। ध्यान रहे पिछले 10 साल में डेढ़ सौ परीक्षाओं के पेपर लीक हुए हैं। इनमें अनेक परीक्षाएं ऐसी हैं, जिनमें एक लाख से ज्यादा छात्र शामिल हुए थे। तभी मई के पहले हफ्ते में पेपर लीक की खबर आने और 12 मई को परीक्षा रद्द होने के बाद ही कांग्रेस को यह मुद्दा उठाना चाहिए था और सरकार को जवाबदेह ठहराना चाहिए था। लेकिन कांग्रेस ने इसकी लड़ाई भी सोशल मीडिया में लड़ी। जब सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस की एक टिप्पणी के आधार पर कॉकरोच जनता पार्टी बन गई और उसने छह जून के प्रदर्शन का ऐलान किया तब कांग्रेस ने उसके पीछे पीछे अपना कार्यक्रम घोषित किया।

कांग्रेस ने तय किया कि राहुल गांधी 17 जून को कोटा जाएंगे। उसके बाद एक लंबा गैप होगा, करीब 23 दिन का। फिर वे 10 जुलाई को प्रयागराज और 11 जुलाई को पटना में छात्रों से संवाद करेंगे और उसके बाद इन तीन कार्यक्रमों का समापन दिल्ली में होगा। यह 23 दिन का जो गैप था वह राहुल गांधी की अगंभीरता और उनकी राजनीति में निरंतरता की कमी को दिखाता है। बताया जा रहा है कि उनका 20 दिन से ज्यादा के लिए विदेश दौरे का निजी कार्यक्रम बना हुआ था।

गौरतलब है कि लगभग उसी समय नीट यूजी के 23 लाख छात्र और सीबीएसई के 10वीं की बोर्ड के 18 लाख के करीब छात्र अपनी समस्याओं से जूझ रहे थे। सीबीएसई की ऑनस्क्रीन मार्किंग व्यवस्था ने छात्रों को बहुत परेशान किया था। लेकिन राहुल गांधी ने देश में रहते हुए भी इसे बड़ा मुद्दा नहीं बनाया और फिर पहले से तय कार्यक्रम के मुताबिक विदेश चले गए। ऐसी स्थिति में बड़ा सवाल यह है कि क्या राहुल गांधी देश के छात्रों व युवाओं को यकीन दिला पाएंगे कि जरुरत होने पर वे उनके साथ खड़े होंगे और उनका मुद्दा उठाएंगे? इसमें संदेह है।

राहुल गांधी ने मंगलवार, 21 जून को प्रधानमंत्री आवास के बाहर जो प्रदर्शन किया वह परफॉर्मेटिव पोलिटिक्स का बेहतरीन उदाहरण है। लेकिन उसके पीछे नैतिक बल और प्रतिबद्धता नदारद है। तभी उनके प्रदर्शन में कांग्रेस के लोग जुटे और कांग्रेस के नेताओं ने भीड़ जुटाई। वह भीड़ उस तरह से ऑर्गेनिक नहीं थी, जैसी जंतर मंतर पर जुटी थी या अब भी जंतर मंतर पर जमी है। छात्रों के ऊपर लाठीचार्ज का मुद्दा उठा कर बुधवार, 22 जुलाई को राहुल गांधी और अन्य विपक्षी सांसद काले कपड़े पहन कर संसद में पहुंचे। लेकिन वास्तविकता यह है कि जब छात्र अपनी समस्याओं से जूझ रहे थे और जंतर मंतर पर लाठी खा रहे थे तब कांग्रेस वहां नहीं थी। इसलिए आगे भी यह यकीन करना मुश्किल होगा कि समय आने पर कांग्रेस वहां मौजूद रहेगी।

कांग्रेस के साथ दूसरी समस्या यह है कि उसके शासन में भी प्रतियोगिता परीक्षाओं के पेपर लीक होते थे। अकेले राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के पिछले शासन काल में यानी 2018 से 2023 के बीच 19 बड़ी परीक्षाओं के पेपर लीक हुए थे। जैसे अभी केंद्र सरकार किसी की जिम्मेदारी तय नहीं कर रही है वैसे ही कांग्रेस ने भी राजस्थान में किसी की जिम्मेदारी तय नहीं की थी। सो, कांग्रेस और राहुल गांधी के सामने कई स्तर पर विश्वसनीयता का संकट है। यह संकट सिर्फ निरंतरता और प्रतिबद्धता से दूर हो सकता है। राहुल गांधी की राजनीति में कुछ मामलों में प्रतिबद्धता तो दिखती है लेकिन निरंतरता का घनघोर अभाव है।

अब भी वे आंदोलन में हिस्सा लेने तभी उतरे हैं, जब उनका विदेश दौरा पूरा हो गया, संसद का सत्र चालू हो गया और 20 जुलाई को संसद मार्च में छात्रों व युवाओं की उग्र भावनाओं का ज्वार दिल्ली की सड़कों पर दिखा। इससे पहले ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस ने मान लिया था कि इस मामले में अब कोई दम नहीं है क्योंकि 21 जून को दोबारा परीक्षा हो गई और अब तो नतीजे भी आ गए। कांग्रेस के लोग कहेंगे कि राहुल गांधी छात्रों की गूंज कार्यक्रम में हिस्सा लेने देहरादून गए थे। लेकिन उसमें राज्य में छह महीने बाद होने वाले चुनाव की तैयारियों की चिंता ज्यादा है।

हालांकि ऐसा नहीं है कि जंतर मंतर पर आंदोलन का नेतृत्व कर रही कॉकरोच जनता पार्टी बहुत प्रतिबद्ध संगठन है। लेकिन उसके पास सोनम वांगचुक का चेहरा है। वांगचुक की भूख हड़ताल ने छात्रों व युवाओं को भरोसा दिलाया और आंदोलन के लिए प्रेरित किया। ऐसी प्रेरणा का भाव कांग्रेस नहीं जगा पा रही है। उसका प्रदर्शन विशुद्ध राजनीतिक गतिविधि है, जिस पर छात्र और उनके अभिभावक कभी भी पूरा यकीन नहीं करेंगे। ऐसा भी हो सकता है कि कांग्रेस की अति सक्रियता छात्रों के मुद्दे को राजनीतिक विमर्श में बदल दे। ऐसा होगा तो भाजपा को फायदा हो जाएगा।

तभी बेहतर होता अगर सोनम वांगचुक के आंदोलन से आशंकित होने और उसे हाईजैक करने की कोशिश करने की बजाय कांग्रेस उसे वैसे ही मजबूत करती, जैसे अन्ना हजारे के आंदोलन को भाजपा व आरएसएस ने मजबूत किया था। अगर एक बड़े मुद्दे पर छात्र व युवा आंदोलित होंगे तो चुनावों में अंततः उसका लाभ कांग्रेस को ही मिलेगा क्योंकि वह मुख्य विपक्षी पार्टी है और उसके पास अखिल भारतीय संगठन है। आखिर अन्ना हजारे के आंदोलन का लाभ भी अरविंद केजरीवाल और भाजपा दोनों को मिला था।

व्यंग्य

जैसा रास्ता, वैसी मंजिल!

वियतनाम, श्रीलंका, फिलीपीन्स और जॉर्डन की प्रति व्यक्ति औसत आय 4,635 डॉलर से अधिक हो गई है, जिससे वे उच्च मध्यम आय वर्ग में पहुंच गए हैं। भारत अभी इस मंजिल से कोसों दूर है।

विश्व बैंक ने बीते हफ्ते वियतनाम, श्रीलंका, फिलीपीन्स और जॉर्डन को उच्च-मध्यम आय वर्ग वाली देशों की श्रेणी में डाल दिया, जबकि जाहिर हुआ कि भारत अभी इस मंजिल से बहुत दूर है। 'सबसे तेजी से उठती अर्थव्यवस्था' और 'विकसित भारत' की कहानियों में यकीन करने वाले समूहों में इस खबर से बड़ी बेचैनी देखी गई है। विश्व बैंक प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय के आधार पर देशों की श्रेणी बनाता है। 1,176 से 4,635 डॉलर प्रति व्यक्ति औसत आय वाले देशों को निम्न मध्य आय वर्ग में रखा जाता है। वियतनाम, श्रीलंका, फिलीपीन्स और जॉर्डन की प्रति व्यक्ति आय 4,635 डॉलर से अधिक हो गई है। जबकि भारत अभी 2,760 डॉलर तक ही पहुंच पाया है।

अपने यहां सबसे ज्यादा व्यग्रता इस तथ्य से पैदा हुई है कि वियतनाम भारत के दो साल बाद यानी 2009 में निम्म मध्यम वर्ग आय श्रेणी में पहुंचा था। उसके 17 साल बाद वह अगली श्रेणी में जा पहुंचा है। जबकि डेमोग्रैफिक डिविडेंड, बड़े उपभोक्ता बाजार और दूरदर्शी नेतृत्व आदि जैसी कथाओं में खोये भारत के सामने मिडल इनकम ट्रैप में फंसे रह जाने की परिस्थिति आ खड़ी हुई है। यहां जानबूझ कर निर्मित निराधार कहानियों ने मानव विकास की उपेक्षा, अनुसंधान एवं विकास की अनदेखी, कारोबार के रास्ते में मौजूद रुकावटों से बेपरवाही तथा आर्थिक और वित्तीय शक्तियों के कुछ घरानों में केंद्रित होते चले जाने की हकीकत पर परदा डाले रखा है।

दूसरी तरफ वियतनाम ने प्रशिक्षित श्रमिक वर्ग तैयार किया, जिससे 'चाइना+1' का दौर आने पर उसका लाभ उठाने में वह सफल हुआ। वह मैनुफैक्चरिंग को बहुरूप देने और निर्यात उन्मुख नीतियों पर अमल करने में कामयाब हुआ। नतीजतन, वहां लाखों नई नौकरियां पैदा हुईं, जिनसे आम जन की आमदनी बढ़ी। फिलीपीन्स पश्चिमी कंपनियों की जरूरत के मुताबिक सेवा प्रदान करने के ढांचे की बदौलत आगे बढ़ा है, तो चार साल पहले व्यापक अस्थिरता का शिकार हुआ श्रीलंका फिर से विकास मार्ग पर चल निकला है। इसके विपरीत भारत के नीति-निर्माता वर्तमान की बलि चढ़ा कर अतीत के गौरव की तलाश में मग्न रहे हैं, तो उसके परिणाम से हम कैसे बच सकते हैं!

ब्लॉग

बिट्टू की एंट्री से बदली पंजाब की चुनावी बिसात, नया समीकरण गढ़ने में भाजपा कामयाब

नीरज कुमार दुबे

केंद्रीय मंत्री पद से रवनीत सिंह बिट्टू का इस्तीफा पंजाब की राजनीति में भाजपा के सबसे बड़े चुनावी दांव के रूप में देखा जा रहा है। माना जा रहा है कि बिट्टू विधानसभा चुनाव लड़ सकते हैं और पार्टी के चुनाव अभियान का प्रमुख चेहरा भी बन सकते हैं। उल्लेखनीय है कि रवनीत सिंह बिट्टू का राज्यसभा कार्यकाल 21 जून को समाप्त हो चुका था। इसके बाद उन्होंने रेल तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया, जिसे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सलाह पर तत्काल प्रभाव से स्वीकार कर लिया। बिट्टू ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि उन्हें देश और विशेष रूप से पंजाब की सेवा करने का अवसर मिला तथा उनका सार्वजनिक जीवन राष्ट्रवाद, सेवा और विकसित भारत के संकल्प के साथ आगे भी जारी रहेगा। भारतीयवायु सेना भर्ती

पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह के पौत्र बिट्टू लंबे समय तक कांग्रेस में रहे। वर्ष 2009 में वह आनंदपुर साहिब से सांसद बने और बाद में दो बार लुधियाना का प्रतिनिधित्व किया। 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले उन्होंने भाजपा का दामन थामा, लेकिन लुधियाना से कांग्रेस के अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग के खिलाफ चुनाव हार गए। इसके बाद उन्हें राजस्थान से राज्यसभा भेजा गया और केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किया गया।

पंजाब की राजनीति में बिट्टू की वापसी इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि वह पिछले कुछ समय से पंजाब में भाजपा के संगठन और चुनावी तैयारी में सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। उन्होंने पहले ही सार्वजनिक रूप से दावा किया था कि भाजपा का लक्ष्य पंजाब में 'डबल इंजन सरकार' बनाना है और प्रधानमंत्री मोदी के विकास के विजन को हर विधानसभा क्षेत्र तक पहुंचाना है।

दरअसल, बिट्टू की वापसी भाजपा की उस व्यापक रणनीति का हिस्सा मानी जा रही है, जिसके तहत पार्टी पंजाब में अपने पारंपरिक शहरी हिंदू वोट बैंक से आगे बढ़कर सिख, दलित और अन्य पिछड़ा वर्ग के बीच भी मजबूत आधार तैयार करना चाहती है। पंजाब में लगभग 58 प्रतिशत आबादी सिखों की है, जबकि करीब 39 प्रतिशत हिंदू हैं। इसके अलावा राज्य में लगभग 32 प्रतिशत दलित और लगभग 16 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग है। भाजपा की कोशिश इन चारों सामाजिक वर्गों में समानांतर स्वीकार्यता बढ़ाने की है।

भाजपा की इसी नई रणनीति की झलक हाल में आई 'सतलुज' फिल्म को लेकर हुए विवाद में भी देखने को मिली थी। रवनीत सिंह बिट्टू ने फिल्म का खुलकर विरोध करते हुए आरोप लगाया कि यह ऐसे संवेदनशील विषय को उभारने का प्रयास है, जिससे पंजाब का माहौल दोबारा तनावपूर्ण हो सकता है। उन्होंने इसे सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वाली कोशिश बताते हुए फिल्म पर सवाल उठाए। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बिट्टू का यह रुख भाजपा की बदली हुई चुनावी रणनीति का संकेत था। पहले जहां पार्टी राष्ट्रीय सुरक्षा और आतंकवाद के मुद्दों पर अपेक्षाकृत आक्रामक भाषा का प्रयोग करती थी, वहीं अब वह सिख समुदाय की धार्मिक और ऐतिहासिक संवेदनशीलताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी राजनीतिक अभिव्यक्ति को अधिक संतुलित और संयमित बना रही है। माना जा रहा है कि भाजपा पंजाब में सिख मतदाताओं के बीच भरोसा बढ़ाने के लिए ऐसे मुद्दों पर सावधानीपूर्वक राजनीतिक संदेश देना चाहती है, ताकि हिंदू, सिख, दलित और अन्य पिछड़ा वर्ग, इन चारों प्रमुख सामाजिक समूहों में समानांतर स्वीकार्यता विकसित की जा सके।

राजनीतिक विश्लेषकों का यह भी मानना है कि शिरोमणि अकाली दल से गठबंधन टूटने के बाद भाजपा ने स्वतंत्र राजनीतिक ताकत बनने की दिशा में लगातार काम किया है। इसका असर चुनावी आंकड़ों में भी दिखा, जहां 2022 विधानसभा चुनाव में लगभग 6.6 प्रतिशत मत पाने वाली भाजपा का वोट प्रतिशत 2024 के लोकसभा चुनाव में बढ़कर लगभग 19 प्रतिशत तक पहुंच गया। यही कारण है कि पार्टी अब पंजाब में अकेले दम पर सत्ता हासिल करने का सपना देख रही है।

हालांकि शिरोमणि अकाली दल के साथ भाजपा के रिश्तों को लेकर राजनीतिक अटकलें अब भी खत्म नहीं हुई हैं। इसका ताजा उदाहरण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पंजाब यात्रा के दौरान देखने को मिला था। जालंधर की सभा में प्रधानमंत्री ने आम आदमी पार्टी, कांग्रेस और 'अकाली दल' तीनों पर निशाना साधते हुए कहा कि अकाली दल भी आपसी स्वार्थों के कारण पंजाब की प्रभावी सेवा नहीं कर पाया। प्रधानमंत्री ने किसी विशेष अकाली गुट का नाम नहीं लिया, लेकिन शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने बाद में दावा किया कि यह टिप्पणी उनकी पार्टी पर नहीं, बल्कि अन्य अकाली धड़ों के लिए थी। इस बयान ने राजनीतिक हलकों में नई चर्चा छेड़ दी, क्योंकि भाजपा और अकाली दल का लगभग 25 वर्षों पुराना गठबंधन 2020 में कृषि कानूनों के मुद्दे पर टूटने के बाद भी दोनों दलों के हर सार्वजनिक बयान को संभावित राजनीतिक संकेत के रूप में देखा जाता है। हालांकि भाजपा नेतृत्व फिलहाल गठबंधन पुनर्जीवित करने की किसी संभावना से इंकार कर रहा है और अपने संगठन को स्वतंत्र रूप से मजबूत करने की बात कह रहा है, फिर भी राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पंजाब की राजनीति में भाजपा और अकाली दल के संबंध इतने महत्वपूर्ण रहे हैं कि दोनों दलों के बीच होने वाला हर संवाद भविष्य की संभावनाओं के नजरिए से परखा जाता है।

साथ ही भाजपा ने अपने राजनीतिक संदेश और भाषा में भी उल्लेखनीय बदलाव किया है। कभी ऑपरेशन ब्लू स्टार को लेकर बेहद आक्रामक रुख अपनाने वाली पार्टी अब सिख समाज की धार्मिक भावनाओं और ऐतिहासिक शिकायतों को अधिक संवेदनशीलता से संबोधित करती दिखाई दे रही है। पार्टी लगातार कांग्रेस को ऑपरेशन ब्लू स्टार, पंजाब में आतंकवाद के दौर और 1984 के सिख विरोधी दंगों के लिए जिम्मेदार ठहराती है, जबकि स्वयं को सिख समाज की भावनाओं का सम्मान करने वाली पार्टी के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही है।

देखा जाये तो भाजपा की इस बदली हुई राजनीतिक रणनीति की पृष्ठभूमि को समझने के लिए उसके पुराने रुख पर भी नजर डालना जरूरी है। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी आत्मकथा 'माय कंट्री, माय लाइफ' में पंजाब में उग्रवाद के दौर के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि कांग्रेस ने अपने राजनीतिक हितों के लिए उग्रवाद को बढ़ावा दिया और हालात इतने बिगड़ने दिए कि अंततः ऑपरेशन ब्लू स्टार की नौबत आ गई। आडवाणी ने यह भी लिखा था कि भाजपा और अन्य दलों के देशव्यापी आंदोलनों के दबाव में तत्कालीन केंद्र सरकार को स्वर्ण मंदिर परिसर से उग्रवादियों को हटाने के लिए सैन्य कार्रवाई करनी पड़ी थी। हालांकि अब पंजाब में चुनावी विस्तार की कोशिशों के बीच भाजपा की सार्वजनिक भाषा पहले की तुलना में कहीं अधिक संतुलित और संवेदनशील दिखाई देती है। पार्टी अब ऑपरेशन ब्लू स्टार को 'राष्ट्रीय त्रासदी' बताते हुए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराती है, लेकिन साथ ही सिख समाज की धार्मिक भावनाओं और ऐतिहासिक पीड़ा को भी प्रमुखता से स्वीकार करने का प्रयास कर रही है।

इसी बदलाव के तहत भाजपा ने हाल के वर्षों में कई प्रतीकात्मक और राजनीतिक कदम उठाए हैं। वीर बाल दिवस की घोषणा, करतारपुर साहिब गलियारे का उद्घाटन, अफगानिस्तान से गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप भारत लाना, 1984 दंगों के मामलों की जांच में तेजी, हवाई अड्डों पर कृपाण ले जाने की अनुमति, स्वर्ण मंदिर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के लगातार दौरे तथा लंबे समय से जेल में बंद कुछ सिख कैदियों को मानवीय आधार पर राहत जैसे फैसलों को इसी व्यापक सिख पहुंच अभियान का हिस्सा माना जा रहा है। भाजपा ने यह भी संकेत दिया है कि सत्ता में आने पर धर्मांतरण विरोधी कानून लाया जा सकता है। भारतीयवायु सेना भर्ती

हालांकि भाजपा इस पूरे अभियान के दौरान एक संतुलन बनाए रखने की कोशिश कर रही है। पार्टी स्पष्ट करती है कि उसका आतंकवाद और खालिस्तानी हिंसा के प्रति रुख नहीं बदला है। पंजाब भाजपा के नेताओं का कहना है कि ऑपरेशन ब्लू स्टार को राष्ट्रीय त्रासदी मानने का अर्थ आतंकवाद का समर्थन नहीं है, बल्कि उस समय की परिस्थितियों के लिए कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराना है।

फिर भी भाजपा की इस नई राजनीतिक भाषा को लेकर संदेह भी कम नहीं है। कई राजनीतिक विश्लेषकों और सिख बुद्धिजीवियों का मानना है कि पार्टी का यह बदलाव मुख्य रूप से चुनावी गणित से प्रेरित है। उनका कहना है कि केवल हिंदू मतों के सहारे पंजाब में सरकार बनाना संभव नहीं है, इसलिए भाजपा सिख मतदाताओं के बीच स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए अपने राजनीतिक संदेश को नया स्वरूप दे रही है।

बहरहाल, अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या भाजपा की सामाजिक समीकरणों पर आधारित नई रणनीति और सिख समाज तक पहुंच बनाने की कोशिश पंजाब के मतदाताओं को प्रभावित कर पाएगी या फिर राज्य की पारंपरिक राजनीतिक ध्रुवीकरण की राजनीति ही चुनाव परिणाम तय करेगी। अगले विधानसभा चुनाव इस सवाल का सबसे बड़ा जवाब साबित होंगे।

पटाखा फैक्टरी में धमाका

लाइसेंस था 15 किग्रा का हर कमरे में दिखा बारूद, सामने आई विस्फोट की ये तीन बड़ी वजह

आर्यावर्त संवाददाता

सहारनपुर। सहारनपुर के गंगोह के कुंडाबसी गांव स्थित पटाखा फैक्टरी में विस्फोट की तीन बड़ी वजह सामने आई है। घटनास्थल पर जिस तरह चार कमरों में विस्फोटक सामग्री और पटाखे रखे हुए थे उससे लग रहा है कि वहां पर क्षमता से अधिक भंडारण था। लाइसेंस केवल 15 किग्रा का था। दूसरी वजह है कि फैक्टरी के लिए लाइसेंस जरूर था, लेकिन इसके अलावा कोई अन्य मानक पूरा नहीं था। तीसरी और सबसे अहम वजह है प्रशासनिक अनदेखी।

फैक्टरी करीब पांच साल पहले शुरू हुई थी। मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने बताया कि फैक्टरी के पास 2028 तक का लाइसेंस है। जानकारी करने पर पता चला कि लाइसेंस 15 किलोग्राम विस्फोटक सामग्री के लिए लाइसेंस लिया गया था, लेकिन फैक्टरी में चार कमरे हैं और चारों में विस्फोट सामग्री और पटाखे रखे हुए थे। कुछ पटाखे बाहर धूप में सूखने के लिए भी रखे गए थे। वह 15 किलोग्राम से कहीं ज्यादा थे। आसपास के ग्रामीणों ने बताया कि फैक्टरी में पिछले कुछ दिनों से हलचल बढ़ गई थी।

दूसरी वजह

नियमानुसार, फैक्टरी शहर या आबादी वाली जगहों से दूर और खुले खेतों या औद्योगिक क्षेत्र में होनी चाहिए, लेकिन यह फैक्टरी गांव से मात्र 300 मीटर दूर है।इमारतों में ऐसी सामग्री का इस्तेमाल होना चाहिए, जो चिंगारी न छोड़े। फर्श पर एंटी-स्टेटिक रबर मैट होने जरूरी हैं, लेकिन यहां ऐसा कुछ नहीं दिखा। केवल सामान्य कमरे बनाए गए थे। आग बुझाने के यंत्र, पानी की टंकी, रेत की बोरियां और फायर अलार्म सिस्टम हर समय तैयार हालत में होने चाहिए, लेकिन यहां पर अग्निशमन यंत्र के नाम पर केवल एक उपकरण दिखाई दिया। इसके अलावा सबसे अहम है कि मजदूरों को आग से बचाने वाले सूती कपड़े, सेफ्टी गॉगल्स और विशेष जूते होने चाहिए।

इस फैक्टरी में किसी भी मजदूर के पास ऐसा कुछ नहीं था। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि फैक्टरी को लाइसेंस किस आधार पर मिला हुआ था। ठेकेदार सभी मजदूरों को लेकर आए थे। नियमानुसार उनके श्रमिक आधार पर बीमा होना चाहिए, लेकिन मजदूरों ने बताया कि किसी का बीमा नहीं है।

तीसरी वजह

तीसरी वजह प्रशासनिक अनदेखी सामने आई है। ग्रामीणों का कहना है कि करीब डेढ़ साल पहले भी फैक्टरी में आग लगी थी। हालांकि उसमें कोई जनहानि नहीं हुई थी। मामले को रफा दफा कर दिया गया था। अगर अधिकारियों ने गंभीरता दिखाई होती तो शायद यह हादसा नहीं होता। एनसीआर से बाहर होने की वजह से जिले में पटाखा फैक्टरी की संख्या काफी है। अग्निशमन या अन्य विभाग की तरफ से दीपावली के नजदीक निरीक्षण की औपचारिक कार्रवाई होती है। बाकी दिनों में किसी का कोई ध्यान नहीं। यहीं वजह रही कि फैक्टरी में इस तरह मानकों की अनदेखी की गई और यह हादसा हुआ।

बारूद का गलत मिश्रण बन सकता है विस्फोट की वजह

जेवी जैन कॉलेज के फिजिक्स विभाग के अध्यक्ष प्रो. संजय कुमार मौर्य के अनुसार, पटाखे बनाने में मुख्य रूप से पोटेशियम नाइट्रेट, सल्फर (गंधक) और चारकोल (कोयला) का उपयोग किया जाता है।

पटाखे बनाते समय कई कारणों से विस्फोट हो सकता है। जैसे रॉ मैटेरियल की गलत हैंडलिंग, इलेक्ट्रिक शॉर्ट सर्किट, पुरानी वायरिंग, ओवरलोड की वजह से चिंगारी निकलना, गन पाउडर, सल्फर और पोटेशियम क्लोरेट आदि केमिकल को आपस में गलत तरीके से मिलाना या उनका तापमान बढ़ाना भी इसका कारण हो सकता है।

एक महीने पहले ही आए थे मजदूर

पटाखा फैक्टरी में काम करने के लिए मजदूर करीब एक महीने पहले ही आए थे। इनमें एक मजदूर अभी सात दिन पहले ही काम पर लौटा। जांच में सामने आया कि फैक्टरी में काम करने वालों की उम्र करीब 19 से 30 साल है, जो कई सौ किलोमीटर दूर मजदूरी करने के लिए आए। वहीं, मृतक दीपराज और संदीप की अभी शादी नहीं हुई थी।

गनीमत रही, चपेट में नहीं आया मदरसा

हादसा स्थल से करीब 60 मीटर की दूरी पर मदरसा स्थित है, जिसमें करीब 100 से अधिक बच्चे पढ़ते हैं। बच्चों ने बताया कि हादसे के समय वह कक्षा में पढ़ाई कर रहे थे। अचानक तेज धमाके की आवाज सुनकर सभी सहम गए और डर के कारण अंदर ही दुबक गए। गनीमत रही कि विस्फोट की आग और उसका असर मदरसे तक नहीं पहुंचा, वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

फैक्टरी के पास 15 किलोग्राम का लाइसेंस था। हादसे को लेकर जांच शुरू कर दी गई है। सभी मानकों की जांच की जाएगी। फैक्टरी मालिक से भी पूछताछ होगी।- प्रताप सिंह, मुख्य अग्निशमन अधिकारी

पटाखा फैक्टरी में विस्फोट

यूपी के सहारनपुर के गंगोह-बिड़ौली मार्ग पर कुंडाबसी गांव में स्थित पटाखा फैक्टरी में शुक्रवार की शाम हुए भीषण विस्फोट में ठेकेदार दीपराज (23) और संदीप (25) की मौत हो गई। फैक्टरी में काम कर रहे दो मजदूर लापता हैं। धमाके की आवाज करीब पांच किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। फैक्टरी का मलबा और शवों के अवशेष लगभग 600 मीटर दूर तक बिखरे मिले। डीएम ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं।

जानकारी के अनुसार, फैक्टरी के एक हिस्से में विस्फोट शाम करीब 4:30 बजे हुआ। उस समय आतिशबाजी के लिए बारूद का मिश्रण बनाया जा रहा था। दूसरी तरफ करीब 20 मजदूर काम कर रहे थे। विस्फोट होते ही मजदूरों में भगदड़ मच गई। बारूद का मिश्रण बना रहे ठेकेदार दीपराज व संदीप निवासी गांव बांझड थाना ढोढवा जिला खरगोन एमपी के चीथड़े उड़ गए।

हाथ, पैर और सिर तक अलग हो गए। कुछ अंग आसपास के पेड़ों पर लटके मिले। पुलिस टीम ने अंगों को इकट्ठा कराया। खरगोन के अकाश और खंडवा के राहुल लापता बताए जा रहे हैं। घटनास्थल पर मौजूद मजदूरों ने बताया कि हादसे के समय आकाश और राहुल भी मौजूद थे लेकिन उनका पता नहीं चल रहा है।

मौके पर पहुंचे डीएम अरविंद कुमार चौहान, एसएसपी अभिनंदन सिंह और मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रताप सिंह समेत अन्य अधिकारियों ने विस्फोट की वजहों की जानकारी ली।

गाजियाबाद के हसन पांच साल से इस जगह पर फैक्टरी चला रहे हैं। उनके पास साल 2028 तक का पटाखे बनाने का लाइसेंस है। फैक्टरी आबादी से करीब 300 मीटर दूर है। देर रात तक फैक्टरी मालिक मौके पर नहीं पहुंचे थे।

छप्पर में मिला युवक का शव, हत्या का आरोप

जौनपुर। बदलापुर कोतवाली क्षेत्र के भलुआही गांव में शनिवार की सुबह घर के बाहर छप्पर में युवक का शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। घटना संज्ञान में आते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही में जुटी हुयी है। मिली जानकारी के मुताबिक चंद्रदीप गौतम पुत्र लाल जी गौतम का घर के बाहर छप्पर में सुबह मृत अवस्था में देखते ही परिजनों में कोहराम मच गया। देखते ही देखते वहां ग्रामीणों की भीड़ लग गयी। जानकारी होते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुये शव को पोस्टमार्टम हेतु जिला मुख्यालय भेज कर यह जानकारी जुटाने लगी कि आखिर युवक की मौत किन परिस्थितियों में हुयी है। वहीं युवक की हुयी मौत पर परिजनों का आरोप है कि मृतक की पत्नी तथा उसके मामा ने युवक की गला दबाकर हत्या की है। हालांकि पुलिस द्वारा हत्या की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गयी है। पुलिस मामले की गंभीरता को देखते हुये समस्त पहलुओं का बारीकी से जांच कर रही है।

साहित्य का काम मानवीय मूल्यों की स्थापना करना – डॉ .विभा सिंह

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। साहित्य व्यक्ति को मनुष्य बनाता है इसका क्षेत्र व्यापक है। साहित्य का काम मानवीय मूल्यों की स्थापना करना है। साहित्य जीवन और समाज के सुख दुख व संघर्षों से हमें परिचित कराता है।

यह बातें राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ विभा सिंह ने कहीं। वह महाविद्यालय के विवेकानंद सभागार में बाबू धनंजय सिंह स्मृति आंतरिक व्याख्यान माला के अंतर्गत आयोजित साहित्य और मानव जीवन विषयक संगोष्ठी को बतौर मुख्य वक्ता सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि साहित्य की सभी धाराओं का एकमात्र उद्देश्य आदर्श समाज की स्थापना करना ही है। साहित्य मनुष्य के सुख-दुख की कहानी है जो दिलों की नफ़रत को मिटाकर इंसानियत जगाती है।

स्वागत करते हुए प्राचार्य प्रोफेसर दिनेश कुमार त्रिपाठी ने बाबू धनंजय सिंह आंतरिक व्याख्यान माला के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय में चल रही यह व्याख्यान माला शिक्षकों व विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास में मददगार साबित हो रही है। संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र विक्रम सिंह रवि और आभार ज्ञापन हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रोफेसर इन्द्रमणि कुमार ने किया। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक डॉ आलोक कुमार पाण्डेय, मुख्य कुलानुशासक प्रोफेसर शैलेन्द्र प्रताप सिंह व परीक्षा नियंत्रक प्रोफेसर धीरेन्द्र कुमार समेत समस्त शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

औरैया में चार्जिंग टॉर्च बनी मौत का कारण .. करंट की चपेट में आने से 19 वर्षीय युवक की दर्दनाक मौत

आर्यावर्त संवाददाता

औरैया। यूपी के औरैया जिले में एक दर्दनाक हादसे सामने आया है, जिसने पूरे गांव को झकझोर कर रख दिया। बेला थाना क्षेत्र के लुखरदौरा गांव में चार्जिंग वाली टॉर्च को बिजली के बोर्ड में लगाते समय करंट लगने से 19 वर्षीय युवक की मौत हो गई। हादसे के बाद परिवार में चीख-पुकार मच गई। वहीं इस घटना के बाद पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है।

लुखरदौरा गांव निवासी 19 वर्षीय इशु शुक्रवार रात करीब साढ़े नौ बजे अपने घर पर मौजूद था। इसी दौरान उसने चार्जिंग वाली टॉर्च को चार्ज करने के लिए बिजली के बोर्ड में लगाने की कोशिश की, जैसे ही उसने टॉर्च को बोर्ड में लगाया, वह अचानक तेज करंट की चपेट में आ गया। करंट का झटका इतना जोरदार था कि वह गंभीर रूप से झुलस गया और मौके पर ही अचेत होकर जमीन पर गिर पड़ा।

हादसा होते ही परिजनों में अफरा-तफरी मच गई। परिवार के लोग तत्काल उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिधूना लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। युवक की मौत की खबर मिलते ही परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

बताया जा रहा है कि इशु चार भाइयों में सबसे छोटा था। उसकी असमय मौत से माता-पिता गहरे सदमे में हैं। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण भी मृतक के घर पहुंच गए। पूरे गांव में शौक का माहौल है।

स्थानीय लोगों के अनुसार, इशु मिलनसार स्वभाव का था और परिवार का बहुत लाड़ला था। उसकी अचानक हुई मौत से गांव के लोग भी स्तब्ध हैं। परिजनों ने पुलिस को घटना की जानकारी दे दी है।

यह हादसा बिजली के उपकरणों का इस्तेमाल करते समय सावधानी बरतने की अहम जरूरत को भी उजागर करता है। चार्जिंग उपकरणों का उपयोग करते समय वायरिंग, प्लग और बिजली के बोर्ड की स्थिति की जांच जरूर करनी चाहिए। थोड़ी सी लापरवाही या खराब उपकरण जानलेवा साबित हो सकते हैं।

हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया कारगिल विजय दिवस

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध राजाराम सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर नारायणपुर सुल्तानपुर यू पी में आज कारगिल विजय दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व प्रधानाचार्य बृजकिशोर तिवारी ने मां शारदे ओम तथा भारत माता के चित्र पर पुष्प अर्पित कर एवं दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। सरस्वती वंदना के बाद अतिथि परिचय प्रधानाचार्य दिग्विजय नाथ पांडेय ने कराते हुए कारगिल के शूरवीरों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा दुर्गम कारगिल चोटी तथा पड़ोसी मुल्क द्वारा धोखे से भारत की सीमा पर पहुंचने का वर्णन करते हुए भारतीय सेना उसके शौर्य एवं साहस को याद किया। शिशु वाटिका द्वारा भैया बहिनों को सैनिक वेश में बुलाया गया था जिसमें कुल 25 भैया बहिनों ने भाग लिया। अतिथि महोदय ने अपने को कारगिल शहीदों को स्मरण करने और उनके बलिदान को अक्षुण्ण रखने की आवश्यकता बताया। प्रधानाचार्य जी ने तिरंगा बनाओ प्रतियोगिता के विजेताओं को मेडल पहनाकर उनका सम्मान किया। कुछ ही समय के लिए रामराजी इंटर कालेज की प्रधानाचार्या रेनू सिंह आई थी उनका भी आशीष भैया बहिनों को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर सभी उपस्थित आगंतुकों का आभार ज्ञापन शिशु वाटिका प्रमुख दीपमाला मिश्र ने किया। संचालन प्रथम सहायक शैलेंद्र पांडेय ने किया। कल्याण मंत्र सर्वे भवन्तु सुखिन्ह के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आईफोन के लिए सड़क पर हाईवोल्टेज ड्रामा, पत्नी ने बॉडी बिल्डर पति के कपड़े फाड़े, कचहरी के बाहर हंगामा

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ के सिविल लाइंस थाना क्षेत्र में पति-पत्नी के आपसी विवाद का हाईवोल्टेज ड्रामा सड़क पर देखने को मिला। कचहरी के बाहर आईफोन को लेकर हुए विवाद में पत्नी ने बॉडी बिल्डर पति के साथ मारपीट कर दी और उसके कपड़े फाड़ दिए। पति ने भी अपनी फटी हुई शर्ट पत्नी के मुंह पर फेंक दी। इस दौरान सड़क पर काफी देर तक हंगामा होता रहा और भीड़ तमाशबीन बनी रही।

बताया जा रहा है कि सोनम और संचित के बीच पहले से पारिवारिक विवाद चल रहा है और मामला न्यायालय में विचाराधीन है। दोनों कचहरी के बाहर पहुंचे थे। इसी दौरान पत्नी ने शादी के बाद पति को दिए गए आईफोन को वापस मांग लिया। आईफोन को लेकर दोनों के बीच कहासुनी शुरू हो गई। विवाद बढ़ने पर पत्नी ने पति का गिरेबां पकड़ लिया और उसके कपड़े फाड़ दिए। देखते ही देखते मामला सड़क पर पहुंच गया।

बॉडी बिल्डर पति को बीच सड़क पीटा

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार महिला ने बॉडी बिल्डर पति के साथ सड़क पर मारपीट की। उसके कपड़े फट गए। पति ने भी अपनी फटी हुई शर्ट पत्नी के मुंह पर फेंक दी। इस दौरान मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई और काफी देर तक हाईवोल्टेज ड्रामा चलता रहा। विवाद के बाद महिला युवक को लेकर थाने पहुंची। पुलिस ने मामले की जानकारी ली और पूरे घटनाक्रम की जांच शुरू कर दी।

सिविल लाइंस क्षेत्र में हुआ हंगामा

बताया जा रहा है कि घटना सिविल लाइंस थाना क्षेत्र के क्रिकेट ग्राउंड रोड की है। पति-पत्नी के बीच पहले से चल रहे विवाद के बीच सड़क पर हुए इस हंगामे का वीडियो भी सामने आने की बात कही जा रही है। पुलिस मामले में दोनों पक्षों से जानकारी जुटा रही है।

प्रा .शि .मि .संघ ने दी श्रद्धांजलि, मुख्यमंत्री को 5 सूत्रीय सौंपा मांगपत्र

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षा मित्र संघ के बैनर तले शनिवार को जनपद के सैकड़ों शिक्षा मित्र कलेक्ट्रेट परिसर में एकत्र हुए। जिला अध्यक्ष बृजेश पाण्डेय के नेतृत्व में सभी ने अपनी लंबित मांगों को लेकर मुख्यमंत्री को संबोधित 5 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी के प्रतिनिधि नायब तहसीलदार नगर प्रभात कुमार को सौंपा। ज्ञापन में संघ ने मूल विद्यालय में वापसी, 12 माह मानदेय, टीईटी उत्तीर्ण शिक्षा मित्रों का सहायक अध्यापक पद पर समायोजन, मृतक आश्रितों को नौकरी व आर्थिक सहायता तथा शिक्षा मित्रों को भी विभागीय टीईटी परीक्षा में शामिल करने की मांग की। पदाधिकारियों ने कहा कि लंबे समय से शिक्षा मित्र आर्थिक और सामाजिक असुरक्षा झेल रहे हैं, इसलिए सरकार को इन मुद्दों पर तत्काल निर्णय लेना चाहिए। इसके बाद संघ के सदस्य जिलापंचायत कार्यालय स्थित शहीद स्मारक पहुंचे। यहां सुप्रीम कोर्ट के 2017 के आदेश के बाद मृत हुए लगभग 15,000 शिक्षा मित्रों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभी ने मोमबत्ती जलाकर दो मिनट का मौन रखा और दिवंगत साथियों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर विजय धर मिश्र, पवन कुमार, प्रमोद कुमार दुबे, संपूर्णानंद पाण्डेय, प्रांजलि श्रीवास्तव, धनंजय यादव, राम प्रसाद मिश्र, अवधेश तिवारी, राजदेव यादव, मनोज मिश्रा, अरुण यादव, शीतला प्रसाद दुबे, उदय प्रताप पाण्डेय, रईस खान, अवधेश पाण्डेय, करुणा शंकर पाण्डेय, संतराम पाल, पूजा, दीप्ति, वंदना, सुनीता, कलावती, विजयलक्ष्मी, नाजिया कौसर, संगीता मौर्य, संगीता वर्मा, रमाशंकर, अखिलेश मिश्रा, अजय तिवारी, रामनाथ, संजय वर्मा, दिनेश पाण्डेय, शैलेंद्र वर्मा, शिव बहादुर, अशोक गुप्ता, विजय कुमार, रामबरन पाल, सियाराम गुप्ता, जंग बहादुर यादव सहित बड़ी संख्या में शिक्षा मित्र उपस्थित रहे।

साथ जाते थे स्कूल, बचपन से था प्यार, इस कारण हिमांशी के परिवार को मंजूर न था रिश्ता; कर दिया बेटी का कत्ल

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। अलीगढ़ के गोंडा के गांव बसौली में विधि छात्रा हिमांशी (20) को परिवार ने झूठी शान की खातिर बृहस्पतिवार रात मौत के घाट उतार दिया। हत्या के बाद आत्महत्या करार देकर आनन-फानन रात में ही अंतिम संस्कार कर दिया। सुबह खबर लगने पर प्रेमी ने एसएसपी के पास पहुंचकर एफआईआर दर्ज कराई। पुलिस ने मां-भाइयों सहित पांच परिजनों को हिरासत में ले लिया है। आरोपी पिता की तलाश जारी है।

प्रेमी की शिकायत पर एसएसपी ने भी घटनास्थल देखा और फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए। सीओ इगलास कमलेश कुमार के अनुसार गांव बसौली के पूर्व प्रधान चौधरी कुलदीप सिंह के छोटे भाई अवधेश सिंह गोंडा ब्लॉक में ही पंचायत सचिव हैं। उनके चार बच्चों में दूसरे नंबर की हिमांशी

लॉ द्वितीय वर्ष की छात्रा थी।

बृहस्पतिवार देर शाम आठ बजे के बाद अचानक से उसकी मौत का शोर मचा। परिवार ने उसे आत्महत्या करार देकर बिना पुलिस को खबर दिए साढ़े दस बजे रात में अंतिम संस्कार कर दिया। इधर, मूल रूप से कस्बा गोंडा दरबर हाल सुमित सरोवर रामघाट रोड क्वार्सी का हर्षित वार्ष्णेय शुक्रवार दोपहर करीब 12 बजे सीधे एसएसपी से मिलने पहुंच गया। उसने एसएसपी को बताया कि वह कस्बा गोंडा में मेडिकल स्टोर चलाता है।

हिमांशी से उसके स्कूल के समय से प्रेम संबंध थे। हिमांशी का परिवार इन संबंधों का विरोध करता था। 15 मार्च को परिजनों के उत्पीड़न से तंग आकर हिमांशी उसकी दुकान पर आ गई थी। तब पीछे से आए उसके भाइयों ने वहां आकर उसे पीटा, जिसके सीसीटीवी साक्ष्य मौजूद हैं।

बाद में परिजन उसे अपने साथ ले गए। मामला गोंडा थाने तक गया। जहां परिजन लिखित राजीनामा कर हिमांशी को अपने साथ ले गए थे। उसने कई बार बताया कि परिजन उस पर प्रेम संबंध तोड़ने का दबाव बनाते हैं और जान से मारने की धमकी देते हैं। हर्षित ने आरोप लगाया कि इसी क्रम में रात हिमांशी के परिजनों ने उसकी हत्या कर साक्ष्य मिटाने के इरादे से शव का अंतिम संस्कार कर दिया है। अब उसे भी अपनी जान का खतरा है।

एसएसपी ने हर्षित को सीधे गोंडा थाने भेजा और थाना पुलिस को घटना स्थल पर भेजा। उसके बाद खुद फॉरेंसिक टीम व सीओ इगलास को लेकर घटनास्थल गए। जहां गांव के बाहर रात में जली हुई चिता मिली। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाते हुए हड्डियां संकलित की हैं और घर से भी साक्ष्य जुटाए हैं। हर्षित की तहरीर पर हिमांशी संग मारपीट, फिर उसकी हत्या, साक्ष्य मिटाने संबंधी धाराओं में परिजनों पर एफआईआर दर्ज कर ली है। सीओ के अनुसार दो सगे भाई, मां, दो मामा आदि हिरासत में हैं। पिता की तलाश की जा रही है।

साथ जाते थे स्कूल, दोनों में बचपन से था प्यार

हिमांशी और सुमित बचपन से गोंडा कस्बे से स्कूल बस से पढ़ने एक साथ अलीगढ़ में खैर रोड के निजी स्कूल में जाया करते थे। तभी से दोनों के बीच प्रेम संबंध थे। दोनों के अलग समाज से होने के कारण हिमांशी के परिवार को उससे यह दोस्ती पसंद

सीओ इगलास कमलेश कुमार के अनुसार, बाद में हर्षित परिवार के साथ गांव से शहर आकर बस गया, लेकिन दोनों में प्रेम संबंध बरकरार रहे। दोनों साथ जीवन जीना चाहते थे लेकिन परिवार लगातार विरोध कर रहा था। उसने हिमांशी से बात करने के लिए उसे मोबाइल भी दिया था।

सीओ के अनुसार अब तक की जांच में उजागर हो रहा है कि परिवार ने हिमांशी की हत्या पूरी प्लानिंग करके की है। जब 15 मार्च को घटनाक्रम हुआ, उस समय उन्होंने कोई कदम सिर्फ इसलिए नहीं उठाया कि अगर कुछ हुआ तो उन्हीं पर शक जाएगा। बात पुरानी होने पर उन्होंने रात में उसे मार दिया। लोगों को बताया कि आठ बजे खाना खाने के बाद वह अपने कमरे में चली गई और तभी फंदे पर लटक गई। गांव के लोगों को दिखाने के लिए आनन-फानन उसे गाड़ी से डालकर शहर के एक निजी अस्पताल तक भी लेकर गए। वहां बाहर से ही उसे स्टाफ ने मृत बताकर वापस कर दिया। इसके बाद आकर अंतिम संस्कार कर दिया। यह सब परिवार की प्लानिंग का हिस्सा ही लग रहा है।

हिरासत में लिए गए परिजनों ने साधी चुप्पी

सीओ के अनुसार अब तक हिरासत में लिए गए परिजनों से काफी पूछताछ के बाद कोई ठोस जानकारी सामने नहीं आई है। शुरुआत में वह आत्महत्या संबंधी बहकी-बहकी बातें कर रहे थे। बाद में चुप्पी साध ली है। अभी आगे भी एक दौर की पूछताछ होनी है। प्रारंभिक जांच में मामला परिवार द्वारा युवती की हत्या का ही लग रहा है। अगर आत्महत्या ही थी तो क्यों बिना पुलिस को सूचना दिए रात में ही आनन-फानन शव का अंतिम संस्कार किया। परिवार पर एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है। कुछ लोग हिरासत में ले लिए हैं। उसने पूछताछ में साक्ष्य निकलवाए जाएंगे। पिता की तलाश जारी है।

- नीरज जादौन, एसएसपी

दिमागी बुखार को लेकर स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

जौनपुर। बारिश के मौसम को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने दिमागी बुखार को लेकर लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी है। जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि यह बीमारी मादा क्यूलेक्स मच्छर के काटने से फैलने वाला वायरस जनित संक्रामक रोग है। यह वायरस मुख्य रूप से शूकर और जंगली पक्षियों में पाया जाता है, जहां से मच्छर के माध्यम से इंसानों तक पहुंचता है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, जहां लंबे समय तक जलभराव और गंदगी रहती है, वहां इस बीमारी का खतरा अधिक होता है। बारिश के मौसम में इसके फैलने की आशंका बनी रहती है।नोडल अधिकारी डॉ. आलोक सिंह ने बताया कि तेज बुखार, सिरदर्द, उल्टी, बेहोशी, शरीर में झटके, मानसिक भ्रम, बोलने में परेशानी, मुंह से झाग आना और गंभीर स्थिति में कोमा या लकवा जैसे लक्षण दिखाई देने पर तत्काल सरकारी अस्पताल में उपचार कराना चाहिए।

ब्रेन एन्यूरिज्मदिमाग की नसों का गुबारे की तरह फूल जाना, ये क्यों होता है

दिमाग की नसे अगरे गुब्बारे की तरह फूल जाती हैं तो इसे ब्रेन एन्यूरिज्म पुकारा जाता है। आखिर ऐसा क्यों होता है, इसके लक्षण क्या है और इससे बचाव कैसे कर सकते हैं।

दिमाग में जो नसें होती हैं, उनकी दीवार जब कमज़ोर होकर गुब्बारे की तरह फूल जाती है, तो उसे ब्रेन एन्यूरिज्म कहते हैं। ये कई सालों तक ऐसे ही रह सकता है, लेकिन अगर ये फट जाए, तो दिमाग में खून बहना शुरू हो जाता है। ये स्ट्रोक का ही एक बहुत खतरनाक रूप है और जान भी ले सकता है। इसलिए, इसे जल्दी पहचानना और इसका इलाज करवाना बहुत ज़रूरी है। डॉ। के के जिंदल (डायरेक्टर, न्यूरोलॉजी, सीके बिड़ला हॉस्पिटल दिल्ली) बताते हैं कि ज्यादातर लोगों को पता ही नहीं चलता कि उन्हें ये बीमारी है, क्योंकि शुरू में इसके कोई खास लक्षण नहीं दिखते।

इसीलिए इसे साइलेंट किलर भी कहते हैं। पर अगर ये बड़ा हो जाए और आसपास की नसों पर दबाव डालने लगे, तो कुछ निशानियां दिखने लगती हैं। एक्सपर्ट से जानें इसके लक्षण और बचाव के लिए क्या किया जा सकता है।

अगर एन्यूरिज्म फटा नहीं है, तो ये लक्षण दिख सकते हैं–

सिर के एक तरफ लगातार दर्द

आंख के पीछे या ऊपर दर्द
धुंधला या दो-दो दिखना
एक पलक का नीचे लटक जाना
चेहरे के एक हिस्से में सुन्नपन या कमजोरी
आंख की पुतली का साइज से बड़ा हो जाना
अगर एन्यूरिज्म फट जाए, तो फौरन डॉक्टर के पास जाएं
ब्रेन एन्यूरिज्म का फटना एक जानलेवा मेडिकल इमरजेंसी है। इसके लक्षणों को बिल्कुल भी हल्के में न लें।
अचानक से बहुत तेज़ सिरदर्द, जो ज़िंदगी में कभी न हुआ हो
जी मिचलाना या उल्टी आना
गर्दन में अकड़न
तेज रोशनी से परेशानी
कन्फ्यूजन, बेहोशी या होश में कमी
दौरे पड़ना
शरीर के किसी हिस्से में कमजोरी या बोलने में दिक्कत।

ऐसी हालत में हर पल कीमती होता है। देर होने पर दिमाग को परमानेंट नुकसान हो सकता है या जान का खतरा भी हो सकता है।

किन लोगों को ज़्यादा ख़तरा होता है?

हाई ब्लड प्रेशर वाले मरीज़
जो लोग सिगरेट पीते हैं
जो ज़्यादा शराब पीते हैं
जिनके परिवार में किसी को पहले ब्रेन एन्यूरिज्म हुआ हो
पॉलीसिस्टिक किडनी डिजीज़ या कुछ जन्मजात बीमारियों वाले लोग
40 साल से ज़्यादा उम्र की महिलाएं

इसकी जांच और इलाज कैसे होता है?

ब्रेन एन्यूरिज्म का पता लगाने के लिए सीटी स्कैन, सीटी एंजियोग्राफी, एमआर एंजियोग्राफी या डिजिटल सब्ट्रैक्शन एंजियोग्राफी (DSA) जैसी जांचें की जाती हैं। इलाज एन्यूरिज्म के साइज़, जगह और फटने के ख़तरे पर निर्भर करता है। इसके लिए माइक्रोसर्जिकल क्लिपिंग, एंडोवैस्कुलर कॉइलिंग या फ्लो-डाइवर्टर जैसी नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है।

क्या इसे रोका जा सकता है?

हर ब्रेन एन्यूरिज्म को तो नहीं रोका जा सकता, लेकिन उसके फटने का ख़तरा ज़रूर कम किया जा सकता है।
ब्लड प्रेशर कंट्रोल में रखें।
सिगरेट पीना पूरी तरह बंद कर दें।
शराब का सेवन कम करें।
अच्छा खाना खाएं और रोज़ाना कसरत करें।
अगर परिवार में किसी को ये बीमारी रही है, तो डॉक्टर की सलाह पर टाइम-टाइम पर जांच करवाते रहें।

किडनी की बीमारी कैसे दिल के लिए बन जाती है खतरा? जानें ऐसा क्यों होता है?

किडनी शरीर का वो अंग है जो टॉक्सिन्स-एक्स्ट्रा वाटर को बाहर निकालने और खून को साफ करने का काम करती है। इसके अलावा ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में भी इसका रोल है। लेकिन अगर इसकी सेहत ठीक न हो तो चीजें काफी बिगड़ सकती है। अगर किडनी की हेल्थ ठीक नहीं है तो ये ठीक से काम नहीं कर पाती है और बॉडी में टॉक्सिन्स जमा होने लगते हैं। इस कंडीशन में हमारी दिल की सेहत पर भी बुरा असर पड़ता है। डॉ। अमर सिंघल (डायरेक्टर – इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टिट्यूट दिल्ली) का कहना है कि किडनी और दिन दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए अंग है।

किडनी की खराब सेहत से दिल कैसे कमजोर पड़ता है ये बहुत कम लोग जानते हैं। लोग किडनी को ठीक रखने पर फोकस करते हैं लेकिन दिल की सेहत बिगड़ रही है इस पर ध्यान बहुत देर में जाता है। चलिए आपको बताते हैं कि कैसे क्रोनिक किडनी डिजीज का दिल पर भी बुरा असर पड़ता है।

किडनी की बीमारी का दिल पर असर

डॉक्टर सिंघल कहते हैं कि जब किडनी ठीक से काम नहीं करती, तो शरीर में अतिरिक्त पानी, नमक और विषैले तत्व जमा होने लगते हैं। इससे ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है और दिल को सामान्य से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। लंबे समय तक ऐसा रहने पर हार्ट अटैक, हार्ट फेलियर और स्ट्रोक जैसी गंभीर समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है।

किन लोगों पर ज्यादा खतरा

इसके अलावा किडनी की बीमारी से शरीर में खून की कमी (एनीमिया), मिनरल्स का असंतुलन और सूजन भी हो सकती है, जो दिल पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं। इसलिए जिन लोगों को डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर या किडनी की समस्या है, उन्हें नियमित रूप से किडनी और दिल दोनों की जांच करानी चाहिए।

किडनी की बिगड़ी सेहत के लक्षण

एक्सपर्ट कहते हैं कि जब किडनी की सेहत ठीक नहीं होती तो शरीर में पैर-चेहरे पर सूजन, बार-बार या कम यूरिन आना, यूरिन में झाग-खून आना और कम भूख लगने जैसे लक्षण नजर आने लगते हैं। इसके अलावा शरीर में खुजली और हाई बीपी भी होने लगता है। शुरू में लक्षण नजर नहीं आते हैं इसलिए इसे साइलेंट डिजीज भी कहा जाता है। डॉ। के मुताबिक रोजमर्रा की कुछ आदतें हैं जो किडनी की हेल्थ को बिगाड़ सकती है। स्मोकिंग, पेन किलर ज्यादा खाना और पूरे दिन ठीक से पानी न पीने जैसी आदतें किडनी को बीमार बनाती हैं।

इन बातों का रखें खास ध्यान

डॉ. सिंघल कहते हैं कि समय पर इलाज, संतुलित खानपान, पर्याप्त पानी, नियमित व्यायाम और डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवाएं लेने से दोनों अंगों को लंबे समय तक स्वस्थ रखा जा सकता है।

खानपान में ऐसी चीजें खाएं जिनमें फाइबर ज्यादा हो और ये बॉडी को हाइड्रेट भी कर पाएं।

दिनभर में कम से कम 2।5 से 3 लीटर पानी जरूर पिएं। इसके अलावा ऐसी फल-सब्जियां खाएं जिनमें पानी की मात्रा ज्यादा हो।

क्या ज्यादा प्रोटीन खाने से सेहत को नुकसान होता है?

क्या ज्यादा प्रोटीन लेने से शरीर को नुकसान होता है? किन लोगों को इससे खतरा रहता है? प्रोटीन से जुड़े इन सवालों का जवाब एक्सपर्ट के जरिए जानें

प्रोटीन एक ऐसा पोषक तत्व है जो अमीनो एसिड से मिलकर बनता है। इससे बॉडी के सेल्स, मांसपेशियां, स्किन, हेयर, नाखून और कई दूसरे अंग बनते हैं। साथ ही ये इनके रिपेयर और सही तरीके से काम करने में भी अहम रोल निभाता है। लेकिन इसके इंटेक को लेकर कई तरह के कंफ्यूजन बने रहते हैं। आजकल एक बात बहुत सुनने को मिलती है कि जितना ज्यादा प्रोटीन खाओगे, उतना ज्यादा फिट रहोगे। लेकिन सच यह है कि हर अच्छी चीज की भी एक सही मात्रा होती है और प्रोटीन भी उससे अलग नहीं है।

प्रोटीन हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी है क्योंकि इससे मसल्स बनती हैं और ये रिपेयर होती है। लेकिन इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि जितना ज्यादा प्रोटीन खाएंगे, उतना ज्यादा फायदा होगा।

अगर आप पूरी तरह स्वस्थ हैं तो कुछ समय तक हाई प्रोटीन डाइट लेना आमतौर पर सुरक्षित माना जाता है। हालांकि, अगर लंबे समय तक जरूरत से ज्यादा प्रोटीन लिया जाए, खासकर रेड मीट और प्रोसेस्ड मीट से तो दिक्कत हो सकती है। इससे शरीर में सैचुरेटेड फैट भी ज्यादा जाता है, जो दिल की सेहत के लिए अच्छा नहीं माना जाता।

प्रोटीन इंटेक पर एक्सपर्ट की राय

किडनी की बीमारी वाले रहें अलर्ट- ऋचा शर्मा सीनियर (डाइटिशियन एंड एचओडी, डायटेटिक्स सेक्शन, यथार्थ सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल) का कहना है कि जिन लोगों को पहले से किडनी की बीमारी है, उन्हें ज्यादा प्रोटीन लेने से बचना चाहिए क्योंकि इससे किडनी पर अतिरिक्त दबाव पड़ सकता है। कुछ रिसर्च में यह भी देखा गया है कि बहुत ज्यादा एनिमल प्रोटीन लेने से किडनी स्टोन का खतरा बढ़ सकता है।

हाई प्रोटीन पर फोकस करना गलत- एक और गलती लोग अक्सर कर देते हैं। पूरा फोकस सिर्फ प्रोटीन पर कर लेते हैं और फल, सब्जियां, साबुत अनाज और दालें कम कर देते हैं। ऐसे में शरीर को फाइबर, विटामिन और मिनरल्स कम मिलने लगते हैं। फिर कब्ज जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं और पूरी डाइट का बैलेंस बिगड़ जाता है। एक्सपर्ट कहती हैं कि सिर्फ ज्यादा प्रोटीन खाने के पीछे मत भागिए। अपनी उम्र, रोज की एक्टिविटी और हेल्थ के हिसाब से जितनी जरूरत है, उतना ही प्रोटीन लीजिए।

ऐसा रखें खानपान- साथ ही कोशिश कीजिए कि प्रोटीन सिर्फ एक ही चीज से न आए। दालें, बीन्स, नट्स, डेयरी, अंडे, मछली जैसे अलग अलग स्रोतों को अपनी डाइट में शामिल करें। आखिर में, अच्छी सेहत का मतलब सिर्फ ज्यादा प्रोटीन नहीं, बल्कि एक संतुलित और पूरी डाइट है।

टोफू असली है या मिलावटी? जानिए फर्क करने के कुछ आसान तरीके

दूध से बने पनीर की तरह दिखने वाला टोफू सोयाबीन से बनाया जाता है और यह शाकाहारियों के लिए प्रोटीन का बेहतरीन स्त्रोत है। इसका सेवन कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने में मदद कर सकता है। हालांकि, हाल ही में सोशल मीडिया पर यह चर्चा है कि बाजार में बिकने वाला अधिकांश टोफू नकली होता है। असली और मिलावटी टोफू के बीच अंतर समझ पाना थोड़ा मुश्किल है। ऐसे में ये तरीके पहचान करने में आपकी मदद कर सकते हैं।

असली और नकली टोफू में क्या है अंतर?

असली टोफू सोयाबीन से बनाया जाता है और इसका रंग क्रीम होता है, जबकि नकली टोफू का रंग सफेद होता है। नकली टोफू बनाने के लिए सोयाबीन के अलावा कई तरह के रसायनों का इस्तेमाल किया जाता है।

असली टोफू को हाथ से तोड़ने पर फाड़ा जा सकता है, जबकि नकली टोफू को तोड़ने पर उसकी बनावट अलग लगती है।

असली टोफू की बनावट चिकनी होती है, जबकि नकली टोफू को हाथ से छूने पर खुरदरा महसूस होता है।

असली टोफू की पहचान के लिए इन तरीकों का करें इस्तेमाल

असली टोफू की पहचान के लिए सबसे पहले इसके लेबल को पढ़ें और देखें कि क्या उस पर सोयाबीन लिखा हुआ है। अगर आपके पास कोई टोफू है तो उसे हाथ से तोड़कर देखें।

अगर वह आसानी से टूट जाता है तो समझ जाएं कि वह असली है। इसके अलावा असली टोफू का रंग क्रीम होता है, जबकि नकली टोफू का रंग सफेद होता है।

नकली और असली टोफू का स्वाद भी अलग होता है।

क्या नकली टोफू खाना सेहत के लिए है नुकसानदायक?

नकली टोफू में इस्तेमाल होने वाले रसायन सेहत पर बुरा असर डाल सकते हैं। इससे शरीर में हानिकारक तत्वों का स्तर बढ़ सकता है और कई बीमारियों का खतरा भी बढ़ सकता है।

नकली टोफू का सेवन करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी कमजोर हो सकती है और पाचन तंत्र भी प्रभावित हो सकता है।

इसलिए, नकली टोफू का सेवन करने से बचें और असली टोफू को ही अपने खाने में शामिल करें।

असली टोफू के फायदे

असली टोफू प्रोटीन का बेहतरीन स्त्रोत है और यह फाइबर, कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम और पोटेशियम जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होता है।

यह दिल को स्वस्थ रखने, रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने और कैंसर के जोखिम को कम करने में मदद कर सकता है।

असली टोफू का सेवन हड्डियों को मजबूत बनाने, पाचन को सुधारने और त्वचा को निखारने में भी सहायक है। इससे आपकी सेहत को कई लाभ मिल सकते हैं।

म्यूचुअल फंड या पीएफ? ईपीएफओ ने बताया किसे चुनना होगा फायदे का सौदा

अगर आप नौकरीपेशा हैं और बेहतर रिटर्न के लिए अपने कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) का पैसा निकालकर म्यूचुअल फंड में लगाने की सोच रहे हैं, तो पहले यह खबर जरूर पढ़ लें। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने साफ तौर पर सलाह दी है कि ईपीएफ और म्यूचुअल फंड को एक-दूसरे का विकल्प नहीं समझना चाहिए। संगठन का कहना है कि रिटायरमेंट प्लानिंग की नींव हमेशा EPF ही रहनी चाहिए, जबकि म्यूचुअल फंड को केवल अतिरिक्त निवेश विकल्प के रूप में देखा जाना चाहिए।

ईपीएफओ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म X पर एक जागरूकता संदेश साझा करते हुए लिखा, "समझदार को ईपीएफ काफी है।" इसके साथ संगठन ने एक वीडियो भी जारी किया, जिसमें EPF और म्यूचुअल फंड के बीच का अंतर समझाया गया है।

ईपीएफ और म्यूचुअल फंड का उद्देश्य अलग

ईपीएफओ के मुताबिक, EPF एक वैधानिक सामाजिक सुरक्षा योजना है, जिसे कर्मचारियों को रिटायरमेंट के बाद आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाया गया है। इसके विपरीत, म्यूचुअल फंड बाजार से जुड़ा निवेश विकल्प है, जिसका मुख्य उद्देश्य लंबी अवधि में संपत्ति (वेल्थ) बनाना है। इसमें रिटर्न बाजार की चाल पर निर्भर करता है और इसमें उतार-चढ़ाव का जोखिम भी रहता है।यही वजह है कि दोनों योजनाओं की तुलना करना या एक को दूसरे का विकल्प मानना सही नहीं है।

ईपीएफ में मिलता है डबल फायदा

ईपीएफ की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें कर्मचारी के साथ नियोक्ता (Employer) भी योगदान देता है। इससे समय के साथ बड़ा रिटायरमेंट फंड तैयार होता है। दूसरी ओर, म्यूचुअल फंड में केवल निवेशक ही पैसा लगाता है।

इसके अलावा, ईपीएफ पर मिलने वाली ब्याज दर हर साल सरकार तय करती है, जिससे अपेक्षाकृत स्थिर और भरोसेमंद रिटर्न मिलता है। हर महीने वेतन से स्वतः कटौती होने के कारण नियमित बचत की आदत भी बनी रहती है।

पेंशन और बीमा का भी लाभ

ईपीएफओ ने बताया कि EPF सिर्फ बचत योजना नहीं है। इसके पात्र सदस्यों को कर्मचारी पेंशन योजना (EPS) और कर्मचारी जमा लिंक्ड बीमा योजना (EDLI) का लाभ भी मिलता है।

रिटायरमेंट के बाद पात्र सदस्य आजीवन पेंशन के हकदार होते हैं। वहीं, सदस्य की मृत्यु होने पर उसके परिवार को पेंशन के साथ 7 लाख रुपये तक का बीमा कवर भी मिल सकता है। म्यूचुअल फंड में इस तरह की सामाजिक सुरक्षा या बीमा सुविधा स्वतः नहीं मिलती।

ईपीएफओ की सलाह क्या है?

ईपीएफओ का कहना है कि म्यूचुअल फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। इसलिए केवल ज्यादा रिटर्न की उम्मीद में ईपीएफ का पैसा समय से पहले निकालकर म्यूचुअल फंड में निवेश करना समझदारी नहीं है।

संगठन ने कर्मचारियों को सलाह दी है कि वे अपने ईपीएफ कॉर्पस को रिटायरमेंट प्लानिंग की मजबूत नींव बनाए रखें। जिन निवेशकों की जोखिम उठाने की क्षमता अधिक है, वे अपने अतिरिक्त निवेश के लिए म्यूचुअल फंड का सहारा ले सकते हैं। हालांकि, ईपीएफओ का मानना है कि नियोक्ता का योगदान, टैक्स लाभ, पेंशन और सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाओं के कारण EPF का महत्व किसी भी अन्य निवेश विकल्प से अलग और खास है।

फोर्स लेबर के खिलाफ की कार्रवाई में अमेरिका ने भारत पर अन्य देशों के मुकाबले लगाया कम टैरिफ

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन ने नए सेक्शन 301 के तहत कार्रवाई में भारत पर 10 प्रतिशत का अपेक्षाकृत कम टैरिफ लगाया जाएगा। अमेरिका ने कहा है कि जांच के दौरान भारत ने फोर्स लेबर से बने उत्पादों के आयात पर रोक लगाने की व्यवस्था अपनाई है। इसी वजह से भारत को उन देशों की तुलना में अधिक अनुकूल श्रेणी में रखा गया है, जिन पर अधिक टैरिफ लगाया गया है।

अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय (एसएसटीआर) ने गुरुवार को घोषणा की कि राष्ट्रपति ट्रंप के निर्देश पर 60 अर्थव्यवस्थाओं से आयातित वस्तुओं पर टैरिफ लगाया जा रहा है, क्योंकि उन्होंने फोर्स लेबर से बने उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने या उसे प्रभावी ढंग से लागू करने में विफलता दिखाई है।

ये नए शुल्क 24 जुलाई से प्रभावी होंगे और संबंधित देशों की फोर्स लेबर आयात नीति के आधार पर 10 प्रतिशत से 12.5 प्रतिशत तक होंगे। भारत उन 17 अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है, जिन पर 10 प्रतिशत का कम टैरिफ लागू होगा। इस सूची में बांग्लादेश, कनाडा, इंडोनेशिया, मलेशिया, मेक्सिको, पाकिस्तान, श्रीलंका और यूनाइटेड किंगडम भी शामिल हैं।

यूएसटीआर के अनुसार, जून में प्रस्तावित कार्रवाई प्रकाशित होने के बाद भारत ने फोर्स लेबर से बने उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लागू किया, जिसके चलते उसे कम टैरिफ वाली श्रेणी में रखा गया।

अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जेमिसन ग्रीर ने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप मानते हैं कि दशकों की नैतिक अपील के बावजूद वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं से फोर्स लेबर समाप्त नहीं हुआ है। अमेरिका लगभग एक सदी से ऐसे उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लागू कर रहा है और उसका सख्ती से पालन भी कराता है। अब समय आ गया है कि हमारे व्यापारिक साझेदार भी ऐसा करें।

उन्होंने कहा, आज की कार्रवाई मानवाधिकारों के उल्लंघन और व्यापार में विकृति दोनों को दूर करने की दिशा में एक कदम है, जिससे दुनिया भर के श्रमिकों का कल्याण बेहतर होगा। जिन देशों ने तेजी से फोर्स लेबर आयात प्रतिबंध अपनाए हैं, उनसे हम इनके प्रभावी क्रियान्वयन की भी उम्मीद करते हैं।

यह कार्रवाई 12 मार्च को शुरू की गई उन जांचों का निष्कर्ष है, जिनमें 60 अर्थव्यवस्थाओं की समीक्षा की गई थी। अमेरिका का आरोप था कि इन देशों ने फोर्स लेबर से बने उत्पादों के आयात पर रोक लगाने या उसे प्रभावी ढंग से लागू करने में विफलता दिखाई।

इस प्रक्रिया के दौरान दो चरणों में सार्वजनिक सुनवाई हुई, 45 से अधिक सरकारों से परामर्श किया गया और 2,100 से अधिक सार्वजनिक टिप्पणियां प्राप्त हुईं एवं 100 से अधिक गवाहों के बयान दर्ज किए गए।

यूएसटीआर ने 2 जून को निष्कर्ष निकाला कि सभी 60 अर्थव्यवस्थाओं की नीतियां और व्यवहार अनुचित हैं तथा वे अमेरिकी व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इस कारण इनके खिलाफ 1974 के ट्रेड एक्ट की धारा 301 के तहत कार्रवाई की जा सकती है।

भारत के अलावा कंबोडिया, ग्वाटेमाला, होंडुरास, श्रीलंका तथा त्रिनिदाद एवं टोबैगो ने भी जांच शुरू होने के बाद फोर्स लेबर से बने उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध लागू किया। वहीं जॉर्डन ने अमेरिका के साथ पारस्परिक व्यापार समझौते के तहत ऐसे कदम उठाने की प्रतिबद्धता जताई।

दूसरी ओर, जांच के दायरे में शामिल अधिकांश अन्य अर्थव्यवस्थाओं, जिनमें चीन, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), वियतनाम और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं, पर 12.5 प्रतिशत का टैरिफ लगाया जाएगा।

यूरोपीय संघ, जापान, दक्षिण कोरिया, स्विट्जरलैंड और ताइवान के लिए अलग व्यवस्था लागू होगी, जिसमें मौजूदा मोस्ट-फेवर्ड-नेशन (एमएफएन) शुल्क दरों को समायोजित करके टैरिफ तय किया जाएगा।

यूएसटीआर ने कुछ उत्पादों को इस कार्रवाई से छूट भी दी है। इनमें चुनिंदा कच्चा माल, घरेलू आपूर्ति श्रृंखला के लिए महत्वपूर्ण वस्तुएं, दवाएं, सेमीकंडक्टर निर्माण उपकरण और ऐसे अन्य उत्पाद शामिल हैं, जिन पर टैरिफ लगाने से आर्थिक व्यवधान पैदा हो सकता है या नीति का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

एजेंसी ने यह भी कहा कि बांग्लादेश, कंबोडिया, इंडोनेशिया और मलेशिया के लिए अतिरिक्त टैरिफ-रेट कोटा विकसित किए जाएंगे, ताकि अमेरिकी कपास और वस्त्र सामग्री का उपयोग कर बने उत्पादों के आयात को बढ़ावा दिया जा सके।

यूएसटीआर की फैक्टशीट के अनुसार, यह कार्रवाई अमेरिका के शीर्ष 60 व्यापारिक साझेदारों पर लागू होगी, जो अमेरिकी आयात का 99.4 प्रतिशत हिस्सा हैं। इसे राष्ट्रपति ट्रंप की उस रणनीति का हिस्सा बताया गया है, जिसका उद्देश्य वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं से जबरन श्रम को समाप्त करना और अन्य देशों को अमेरिका जैसी आयात प्रतिबंध व्यवस्था अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

सेक्शन 301 अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि को यह अधिकार देता है कि वह उन विदेशी सरकारी नीतियों की जांच करे और उनके खिलाफ कार्रवाई करे, जिन्हें अमेरिकी व्यापार के लिए अनुचित, भेदभावपूर्ण या बाधक माना जाता है। पहले भी इस प्रावधान का इस्तेमाल चीन सहित कई बड़े व्यापारिक विवादों में किया जा चुका है, जबकि वर्तमान प्रशासन ने इसे श्रम संबंधी व्यापारिक मामलों तक भी विस्तारित कर दिया है।

नाकेबंदी तोड़ने पर मिसाइल से उड़ाया जहाज का इंजन रूम, अमेरिका का बड़ा दावा

तेहरान, एजेंसी। अमेरिकी सेना ने शुक्रवार को एक और कमर्शियल जहाज़ पर गोलीबारी करने का दावा किया। उन्होंने कहा कि जहाज ईरानी बंदरगाहों की नाकेबंदी तोड़ने की कोशिश कर रहा था। वहीं, ईरान ने फारस की खाड़ी के आसपास अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया। लगातार 13वीं रात हमले होने के बाद भी अमेरिका और ईरान के बीच टकराव कम होने के कोई संकेत नहीं दिखे। लड़ाई फिर से तेज़ होने और कूटनीति के अनिश्चित होने के बीच, दोनों पक्षों ने ऐसे कदम उठाए, जिनसे तनाव और बढ़ने की आशंका है।

मिडिल ईस्ट में अमेरिकी दूतावासों ने इलाके में मौजूद अमेरिकियों को चेतावनी देना शुरू कर दिया है कि वहां से निकलने के विकल्प सीमित हो सकते हैं। वहीं, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड ने पड़ोसी देशों के लोगों को सलाह दी है कि वे अमेरिकी सैनिकों वाले ठिकानों से दूर रहें। अमेरिकी सेंट्रल कमांड के प्रवक्ता कैप्टन टिम हॉकिन्स ने एसोसिएटेड प्रेस को बताया कि अमेरिकी सेना ने ओमान की खाड़ी में M/T लैवेन जहाज को तब बेकार कर दिया, जब उसने कम से कम चार बार नाकेबंदी तोड़ने की कोशिश की। हॉकिन्स ने जोर देकर कहा कि जहाज़ के क्रू को चेतावनी दी गई थी, लेकिन उन्होंने आदेश नहीं माने। इसके बाद सेना ने जहाज के इंजन रूम में गोलीबारी की। सेना द्वारा नाकेबंदी फिर से लागू किए जाने के बाद से यह दूसरा कमर्शियल जहाज है जिसे बेकार किया गया है। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कहा कि उसने 12 जहाजों का रास्ता भी बदला है।

हर दिन हमले कर रहा अमेरिका

इससे पहले शुक्रवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान के साथ बातचीत को अब तक की सबसे गंभीर बातचीत बताया, जबकि अमेरिका रोजाना हमले कर रहा है। ट्रंप ने पत्रकारों से कहा, हम पूरी तरह तैयार हैं और कार्रवाई के लिए तैयार हैं, लेकिन हम उनसे बातचीत भी कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें युद्ध खत्म करने की कोई जल्दी नहीं है।

दादागिरी के आगे नहीं झुकेगा ईरान

ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि ईरान अमेरिका की दादागिरी के आगे नहीं झुकेगा। उन्होंने चीन और रूस जैसी वैश्विक ताकतों के साथ चल रही बातचीत का ज़िक्र किया, जिनके अक्सर अमेरिका के साथ मतभेद रहते हैं। साथ ही, अर्ध-सरकारी समाचार एजेंसी तस्नीम को दिए एक इंटरव्यू में चेतावनी दी कि इस्लामिक रिपब्लिक न तो धमकियों से डरेगा और न ही दबाव के आगे झुकेगा। इस लड़ाई के केंद्र में होर्मुज़ स्ट्रेट है, जो दुनिया भर में ऊर्जा आपूर्ति के लिए एक अहम रास्ता है। ईरानी हमलों के कारण यह रास्ता असल में बंद हो गया है, जिससे ईंधन की कीमतें तेजी से बढ़ी हैं और बड़े पैमाने पर आर्थिक उथल-पुथल मची है।

अमेरिका ने ईरान और आस-पास के देशों में हमले किए

उत्तरी इराक के शहर इरबिल में, जहां अमेरिकी सैन्य सलाहकारों की एक टुकड़ी तैनात है, सुरक्षा अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि अमेरिका के नेतृत्व वाली सेना ने विस्फोटक से लदे पांच ड्रोन मार गिराए। इराक के अर्ध-स्वायत्त कुर्द क्षेत्र की राजधानी इरबिल में बार-बार धमाकों की आवाज़ें सुनी गईं और इसके हवाई अड्डे के पास काले धुएं के गुबार देखे गए, जहां अमेरिकी सेना का ठिकाना है। अमेरिकी सैन्य अधिकारियों ने इन हमलों के बारे में टिप्पणी के अनुरोध का कोई जवाब नहीं दिया। इस बीच, ईरान के रिवोल्यूशनरी गार्ड ने कहा कि उसने कुवैत के उदैरी में अमेरिकी ठिकाने को निशाना बनाया और गोला-बारूद व सामान रखने वाले तीन शेड जलाकर नष्ट कर दिए। उसने यह भी दावा किया कि उसने बहरीन में तैनात अमेरिकी नौसेना के पांचवें बेड़े (फिफ्थ फ्लीट) के एक वॉचटावर पर हमला किया, जिससे उसे नुकसान पहुंचा। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने इन दावों के बारे में पूछे गए सवालों का कोई जवाब नहीं दिया। बहरीन और जॉर्डन दोनों ने कहा कि उन्होंने शुक्रवार को ईरान द्वारा किए गए हवाई हमलों को बीच में ही रोक दिया।

रिवोल्यूशनरी गार्ड के नौसैनिक अड्डे पर हमला

अर्ध-सरकारी समाचार आउटलेट 'फार्स' और 'ISNA' के अनुसार, जब अमेरिका और उसके सहयोगियों के ठिकानों पर लगातार हमले किए जा रहे थे, तब अमेरिका ने उत्तरी ईरान में रिवोल्यूशनरी गार्ड के नौसैनिक अड्डे पर हमला किया। अमेरिकी बमबारी से ईरान के केशम द्वीप पर भी धमाकों की खबर मिली। यह द्वीप ड्रोन-बोट जैसे नौसैनिक साधनों का अड्डा है, जिनका इस्तेमाल ईरान स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों पर हमला करने के लिए कर सकता है। इसके अलावा, इस्फ़हान प्रांत में भी धमाके हुए, जहां ईरान का एक बड़ा हवाई अड्डा और परमाणु स्थलों में से एक स्थित है। खबरों के अनुसार, ईरान के दक्षिण-पश्चिम खुजेस्तान प्रांत और दक्षिणी फार्स प्रांत में भी अतिरिक्त हमले किए गए। सेंट्रल कमांड ने कहा कि हमलों का यह नया दौर क्षेत्रीय जलमार्गों से गुजरने वाले आम नाविकों और व्यावसायिक जहाजों के लिए खतरा पैदा करने की ईरान की क्षमता को और कम करने के मकसद से किया गया था, क्योंकि अमेरिकी होर्मुज़ को फिर से खोलने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे शांति के समय दुनिया का पांचवां हिस्सा तेल और गैस का व्यापार होता था।

हूती हमलों से ईरान को संभावित बातचीत में बढ़त

ईरान की सरकारी समाचार एजेंसी के अनुसार, ओमान का एक राजनयिक प्रतिनिधिमंडल, जो अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थता की कोशिशों में शामिल रहा है। शुक्रवार को तेहरान में होर्मुज़ स्ट्रेट में शिपिंग ट्रैफ़िक के प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए मौजूद था।

ईरान की होर्मुज को प्रभावी ढंग से बंद करने और मिडिल ईस्ट से कहीं आगे आर्थिक उथल-पुथल मचाने की क्षमता उसे बातचीत में ज़बरदस्त बढ़त देती है। उसके हूती सहयोगियों ने उस बढ़त को और बढ़ा दिया जब उन्होंने गुरुवार को लाल सागर में सऊदी अरब के दो तेल टैंकरों को निशाना बनाया, जिससे मध्य पूर्वी तेल के लिए एक और महत्वपूर्ण रास्ते से शिपिंग का जोखिम बढ़ गया। इन हमलों ने सऊदी अरब से जुड़ी शिपिंग के लिए बाब अल-मंडेब स्ट्रेट को बंद करने की हूतियों की धमकी को सच कर दिखाया। अरब प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे पर स्थित यह स्ट्रेट लाल सागर को अदन की खाड़ी से जोड़ता है, और दुनिया का लगभग 12% व्यापार, जिसमें वैश्विक कंटेनर ट्रैफिक का एक चौथाई हिस्सा शामिल है, यहीं से होकर गुजरता है।

घटा अमेरिका का रुतबा... प्रतिशोध पर अडिग मुज्तबा, पूरे अरब में फैला ईरान का खौफ

वॉशिंगटन, एजेंसी। ऑपरेशन नस्र 2 के तहत ईरान ने एक ऐसी 'मल्टी-टैप' रणनीति अपनाई है, जिसने अमेरिकी एयर डिफेंस की धज्जियां उड़ा दी हैं। जॉर्डन से लेकर बहरीन, कुवैत और कतर तक फैले अमेरिकी ठिकानों पर हुए इन घातक हमलों में न सिर्फ 100 से ज्यादा अमेरिकी सैनिक घायल हुए हैं, बल्कि अमेरिका के सैन्य रुतबे को भी करारा झटका लगा है। हालात इतने बेकाबू हो चुके हैं कि 1,400 से ज्यादा पैट्रियट मिसाइलें गंवाने के बाद अब पेंटागन को 30 साल पुरानी और आउटडेटेड PAC-2 मिसाइलों का सहारा लेना पड़ रहा है।

मुज्तबा का प्रतिशोध, अमेरिका की मिसाइलों का अकाल और पश्चिम एशिया में टूटते सुरक्षा चक्र पर पढ़ें ये खास रिपोर्ट। मुज्तबा खामेनेई का प्रतिशोध शुरू हो गया है। साफ संदेश दे दिया है कि नया नेतृत्व पीछे हटने के लिए नहीं, बल्कि जवाब देने और बदला लेने आया है। इस लहर में इस बार ईरान ने कुवैत, बहरीन, जॉर्डन, कतर और UAE जैसे अरब के देशों में अमेरिका से जुड़े ठिकानों और कंपनियों पर एक साथ ड्रोन, मिसाइल और हाइपरसोनिक हथियारों से हमला कर दिया। ईरानी आईआरजीसी ने एमाद, खैबर शिकन, जिल्फिकार, फतह मिसाइल और शाहेद ड्रोन के हमले दिखाई दे रहे हैं।

ईरान ने इस बार पारंपरिक युद्ध की बजाय 'मल्टी-टैप' रणनीति अपनाई है। यानी हमला एक साथ कई मोर्चों पर। कई अलग अलग हथियारों से और कई स्तर पर हो रहा है। मुज्तबा खामेनेई के नेतृत्व में शुरू हुआ ऑपरेशन नस्र 2 अब ऐसे चरण में पहुंच गया है। जहां हर नए हमले के साथ अमेरिका की साख और अरब में उसकी सुरक्षा गारंटी पर सवाल उठ रहे हैं। इस बार ईरान ने केवल मिसाइलें नहीं दागीं। बल्कि पूरी युद्ध रणनीति बदल दी। एक साथ कई दिशाओं से और कई तरह के हथियारों से किए गए हमलों का मकसद अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के एयर डिफेंस पर इतना दबाव बनाना था कि वो कन्फ्यूज हो जाए। कि हमला करना कहां हैं और रोकना कहां है?

अमेरिका के एयर डिफेंस कन्फ्यूज

अरब देशों में अमेरिका के एयर डिफेंस को कन्फ्यूज करने वाली ईरान की इस बदली हुई रणनीति में स्वॉर्म और मल्टी-टैप अटैक दोनों शामिल हैं। और इसका नतीजा ये रहा कि बीती रात अरब के तकरीबन हर अमेरिकी बेस के आस पास सायरन गूंजते रहे। और एयर डिफेंस सिस्टम लगातार सक्रिय रहे। लेकिन अमेरिका की सबसे बड़ी चिंता ये है कि ऑपरेशन नस्र 2 की 26वीं लहर में ईरान ने न सिर्फ मल्टी टैप हमले किए, बल्कि ये हमले अमेरिका को चौंकाने वाली हद तक सटीक थे।

बहरीन में अमेजन वेब सर्विसेज के सर्वर परिसर पर हमला

बहरीन में अमेजन वेब सर्विसेज के सर्वर परिसर को बेहद सटीक तरीके से निशाना बनाया। ईरान ने दावा किया कि उसके ड्रोन ने अमेरिकी रक्षा प्रणालियों को पूरी तरह चकमा देते हुए इस डेटा सेंटर को सीधे निशाना बनाया। इसके बाद जारी की गई सैटेलाइट तस्वीरों और विजुअल एनालिसिस में साफ देखा जा सकता है कि इरानी वारहेड ने कंक्रीट के बेहद मजबूत ढांचे को चीरते हुए लगभग 19 मीटर चौड़ा भीषण क्रेटर बना दिया। जिससे सीधे अंदरूनी सर्वर इंफ्रास्ट्रक्चर को तबाह कर दिया।

ईरान को रूस और चीन से खुफिया या तकनीकी सहयोग

ईरान ने हमले से पहले और बाद की तस्वीरें जारी करके दावा किया है कि CENTCOM यहां से क्लाउड डेटा नेटवर्क का इस्तेमाल करके ईरान पर हमले की तैयारी कर रहा था। अब अमेरिका की सबसे बड़ी चिंता अब हमलों की बढ़ती सटीकता को लेकर है। अमेरिकी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पेंटागन और CIA को खबर मिली है कि ईरान को रूस और चीन से खुफिया या तकनीकी सहयोग मिल रहा है। अमेरिकी युद्ध मंत्री पीट हेगसेथ ने भी कहा है कि रूस और चीन किसी स्तर पर ईरान की मदद कर रहे हैं। यानी ऑपरेशन नस्र 2 की 'मल्टी-टैप' लहर अरब देशों और वहां मौजूद अमेरिकी एयर डिफेंस पर बहुत भारी पड़ रही है।

26वीं लहर में ईरान ने तीन स्तरों वाले हमले किए

ऑपरेशन नस्र 2 की 26वीं लहर में ईरान ने तीन स्तरों वाला हमला किया, जिसमें ड्रोन, बैलिस्टिक और हाइपरसोनिक हथियारों के इस 'त्रिशूल' से एक साथ कई अमेरिकी ठिकानों को निशाना बनाया गया। हमले की शुरुआत शाहेद आत्मघाती ड्रोन के झुंड से हुई। इसकी रेंज 2000 किलोमीटर तक है इनका मकसद दुश्मन के एयर डिफेंस को उलझाना और उस पर दबाव बढ़ाना था। इसके बाद मैदान में उतारी गईं 1,700 किलोमीटर रेंज वाली इमाद बैलिस्टिक मिसाइल। MARV तकनीक के कारण अंतिम चरण में भी ये अपना रास्ता बदलकर सटीक निशाना साध सकती है।

फिर आई जुल्फिकार बैलिस्टिक मिसाइल की बारी

700 किलोमीटर रेंज की जुल्फिकार कम दूरी की तेज प्रतिक्रिया वाली बैलिस्टिक मिसाइल है। इसे बहुत तेजी से लॉन्च किया जा सकता है। खैबर शिकन से भी हमले हुए। 1,450 किलोमीटर रेंज की ठोस ईंधन से चलने वाली आधुनिक बैलिस्टिक मिसाइल है। ईरान का दावा है कि इसे THAAD जैसी रक्षा प्रणालियों को चकमा देने के लिए विकसित किया गया है। ईरान ने 1,400 किलोमीटर तक रेंज वाली फतह हाइपरसोनिक मिसाइल से भी हमला किया। इसकी 18000 किलोमीटर/घंटा यानी 4 किलोमीटर/सेकंड की रफ्तार ही इसकी सबसे बड़ी खूबी है। इसी रफ्तार की वजह से इसे इंटरसेप्ट करना मुश्किल है।

100 अमेरिकी सैनिक घायल, 18 की मौत

ईरान के ताजा हमलों का सबसे बड़ा असर अब अमेरिकी सेना पर दिखाई दे रहा है। पेंटागन के मुताबिक जुलाई की शुरुआत से अब तक करीब 100 अमेरिकी सैनिक घायल हुए हैं। 18 सैनिकों के अब तक मारे जाने की भी खबर है। अमेरिका के गंभीर रूप से घायल सैनिकों को इलाज के लिए जर्मनी के अमेरिकी सैन्य अस्पताल भेजना पड़ा। यानी अब इस जंग में अमेरिकी सेना भी बड़ी कीमत चुका रहे हैं। ईरान का दावा है कि अब ऑपरेशन नस्र 2 के तहत हो रहे उसके जवाबी हमलों का मकसद केवल रनवे या इमारतों को नुकसान पहुंचाना नहीं है। बल्कि अमेरिकी सैन्य अभियानों की रीढ़ माने जाने वाले कमांड, संचार और लॉजिस्टिक नेटवर्क उसके टारगेट हैं।

कैसी है जंतर-मंतर पर पुलिस के झड़प में घायल छात्रा सेहत, RML अस्पताल ने जारी किया हेल्थ बुलेटिन

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली में कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के सोमवार (20 जुलाई) को संसद मार्च के दौरान पुलिस की कार्रवाई में गंभीर रूप से जख्मी हुई 21 साल की छात्रा साक्षी की सेहत को लेकर नया अपडेट आया है। रिपोर्ट के मुताबिक छात्रा की हालत में लगातार सुधार हो रहा है और अब वो पहले से काफी बेहतर है।

RML अस्पताल ने साक्षी का हेल्थ बुलेटिन जारी किया है, जिसमें सुधार की बात कही गई है। साक्षी दिल्ली के डॉ। राम मनोहर लोहिया (RML) अस्पताल में भर्ती हैं। उसकी हालत में सुधार हो रहा है। हेल्थ बुलेटिन में बताया गया कि करीब 72 घंटे पहले छात्रा को सफलतापूर्वक वेंटिलेटर सपोर्ट से हटा दिया गया था। वह होश में और डॉक्टरों के डॉक्टरों के निर्देशों का सही तरीके से जवाब दे रही है। रिपोर्ट के मुताबिक पिछले 24 घंटों में उसे मुंह से खाना (ओरल फ़ीड) देना भी शुरू कर दिया गया है, जिसे वह अच्छी तरह से ले पा रही हैं।

डॉक्टरों की निगरानी में छात्रा

डॉ राम मनोहर लोहिया (RML) अस्पताल डॉक्टरों के अनुसार, फिलहाल उसकी हालत स्थिर बनी हुई है। उसे अभी भी जिसके बाद उसे वेंटिलेटर से हटा दिया गया है। बुलेटिन में बताया गया है कि छात्रा अब नेचुरल तरीके से सांस ले रही पा रही है।

वेंटिलेटर हटाया गया

आईसीयू में एक्सपर्ट डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया है। रिपोर्ट के मुताबिक छात्रा के दिमाग और रीढ़ की हड्डी का एमआरआई नार्मल आया है जो बड़ी राहत है।

प्रदर्शन के दौरान हुई छी जख्मी

साक्षी RML अस्पताल में भर्ती इस तरह की घटना में घायल हुई इकलौती मरीज है। वो दिल्ली के छतरपुर एक्सटेंशन की रहने वाली है। सोमवार को CJP की ओर से आयोजित प्रदर्शन में हजारों लोग संसद की ओर मार्च करते हुए पहुंचे थे। इस दौरान प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए पुलिस के आंसू गैस छोड़ी थी। इस दौरान मची भगदड़ वह गिर गई थी। इसकी वजह से उसके शरीर पर कई जगहों पर चोट लगी थी। गंभीर हालत में साक्षी को RML अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां डॉक्टर लगातार उसकी सेहत पर नजर बनाए हुए हैं। अब उसकी हालत में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है।

कश्मीर में आतंक के पूरे नेटवर्क पर सबसे बड़ा प्रहार, ढाई हजार से ज्यादा संदिग्ध हिरासत में लिये गये

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर में अनंतनाग के लाल चौक में अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात जम्मू-कश्मीर पुलिस के हेड कांस्टेबल आशिक हुसैन कुरैशी की दिनदहाड़े हत्या के बाद सुरक्षा एजेंसियों ने आतंक के पूरे तंत्र पर अब तक का सबसे व्यापक प्रहार शुरू कर दिया है। घाटी में एक ही रात में ढाई हजार से अधिक संदिग्धों को हिरासत में लिया गया, वांछित लश्कर-ए-तैयबा आतंकियों के दो घर नियंत्रित विस्फोट कर ध्वस्त कर दिए गए और आतंकवाद को खाद-पानी देने वाले नेटवर्क को जड़ से खत्म करने का अभियान तेज कर दिया गया। इसी बीच अंतरराष्ट्रीय सीमा पर पाकिस्तानी ड्रोन की संदिग्ध गतिविधियों ने यह भी संकेत दे दिया कि सीमा पार बैठे आकाओं की साजिशें लगातार जारी हैं।

हम आपको बता दें कि सुरक्षा एजेंसियों ने अनंतनाग और बिजबेहड़ा में लश्कर-ए-तैयबा के दो वांछित आतंकियों आदिल अहमद ठोकर और

हारून राशिद गनई के पैतृक घरों को नियंत्रित विस्फोट के जरिए ध्वस्त कर दिया। दोनों वर्ष 2018 से लश्कर से जुड़े बताए जाते हैं। आधी रात के बाद सुरक्षा बल गांवों में पहुंचे, परिवारों को पहले सुरक्षित बाहर निकाला और फिर विस्फोट कर मकानों को गिरा दिया। आदिल ठोकर का घर इससे पहले पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए भीषण आतंकी हमले के बाद भी ध्वस्त किया जा चुका था।

इसके समानांतर पूरी घाटी में आतंकियों के मददगारों पर शिकंजा कसते हुए 2500 से अधिक लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया। पुलिस के अनुसार ये वे संदिग्ध हैं जिन पर आतंकियों को ठिकाना, परिवहन, धन, संचार सुविधा और अन्य रसद उपलब्ध कराने का संदेह है। अकेले श्रीनगर में लगभग 700, बारामूला में 178, बडगाम में 200, गांदरबल में 100 और अनंतनाग, शोपियां तथा कुलगाम में सैकड़ों लोगों को हिरासत में लिया गया। सुरक्षा एजेंसियों का स्पष्ट संदेश है कि अब केवल बंदूक उठाने वाला आतंकी ही नहीं, बल्कि उसका हर सहयोगी कानून के दायरे में आएगा। यह पूरी कार्रवाई उस कायराना हमले के बाद शुरू हुई जिसमें 45 वर्षीय हेड कांस्टेबल आशिक हुसैन कुरैशी की आतंकियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। बडगाम के लालपोरा निवासी कुरैशी अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात थे। 22 जुलाई को अनंतनाग के लाल चौक में उन पर दिनदहाड़े हमला किया गया। पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैयबा के छद्म संगठन 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' ने सोशल मीडिया के माध्यम से इस लक्षित हत्या की जिम्मेदारी ली। हमले के बाद से फरार आतंकी की तलाश लगातार जारी है और सुरक्षा बल व्यापक तलाशी अभियान चला रहे हैं।

घटना के बाद जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने उच्चस्तरीय सुरक्षा समीक्षा बैठक की और अधिकारियों को पूरी सतर्कता बरतने तथा उभरते हर खतरे को तत्काल निष्प्रभावी करने के निर्देश दिए। उन्होंने अमरनाथ यात्रा की सुरक्षा व्यवस्थाओं की भी समीक्षा की। साथ ही उपराज्यपाल मनोज सिन्हा स्वयं बडगाम पहुंचकर शहीद आशिक हुसैन कुरैशी के परिजनों से मिले। उन्होंने परिवार को भरोसा दिलाया कि प्रशासन हर परिस्थिति में उनके साथ खड़ा है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि शहीद के पुत्र को अनुकंपा के आधार पर सरकारी नौकरी के लिए पात्र होने तक परिवार को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जाएगी। सिन्हा ने कहा कि पूरे देश को इस वीर पुलिसकर्मी की बहादुरी पर गर्व है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी शहीद के परिवार से फोन पर बात कर संवेदना व्यक्त की। भाजपा विधायक एवं नेता प्रतिपक्ष सुनील शर्मा जब शहीद के घर पहुंचे, उसी दौरान शाह ने शहीद के पुत्र से बातचीत कर परिवार को भरोसा दिलाया कि केंद्र सरकार उनके साथ मजबूती से खड़ी है और इस बलिदान को कभी भुलाया नहीं जाएगा।

मिर्जापुर : द फिल्म को लेकर श्वेता त्रिपाठी बोलीं- गोलू गुप्ता का सफर मेरे करियर का सबसे खास अनुभव

लंबे समय से दर्शकों के दिलों पर राज कर रही मिर्जापुर फ्रेंचाइजी अब ओटीटी की दुनिया से निकलकर बड़े पर्दे पर दस्तक देने जा रही है। मिर्जापुरः द फिल्म में एक बार फिर अभिनेत्री श्वेता त्रिपाठी अपने लोकप्रिय किरदार गोलू गुप्ता के रूप में नजर आएंगी। फिल्म की रिलीज से पहले अभिनेत्री ने अपने किरदार की यात्रा, फ्रेंचाइजी से जुड़े अनुभव और दर्शकों के प्यार को लेकर कई बातें साझा की। उन्होंने बताया कि गोलू का किरदार समय के साथ काफी बदल गया है और एक ऐसी लड़की से एक मजबूत महिला तक का सफर तय कर चुका है, जो सही और गलत की समझ से आगे बढ़ते हुए ताकत, दर्द, बदले और महत्वाकांक्षा जैसी भावनाओं से गुजरती है। श्वेता त्रिपाठी ने कहा, जब हमने करीब आठ साल पहले मिर्जापुर की शूटिंग शुरू की थी, तब हममें से किसी ने नहीं सोचा था कि यह सफर इतना लंबा और खास होगा। एक कलाकार के तौर पर आप हमेशा चाहते हैं कि आपका काम लोगों तक पहुंचे, लेकिन बहुत कम ऐसा होता है जब कोई शो लोगों की बातचीत, मीम्स, सेलिब्रेशन और उनकी भाषा का हिस्सा बन जाए। मिर्जापुर ने यह कर दिखाया।

उन्होंने कहा, इस फ्रेंचाइजी ने कलाकारों को ऐसी पहचान दी, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। दर्शकों ने सिर्फ कहानी को पसंद नहीं किया, बल्कि इसके किरदारों से गहरा जुड़ाव महसूस किया। लोग मुझे आज भी मेरे असली नाम से ज्यादा गोलू दीदी के नाम से पहचानते हैं।

फिल्म के रूप में मिर्जापुर के विस्तार को लेकर श्वेता ने कहा, यह सिर्फ एक सीरीज को बड़े पर्दे पर लाने की कोशिश नहीं है, बल्कि यह उन दर्शकों के प्यार का नतीजा है, जिन्होंने कई सालों तक इस कहानी और किरदारों को अपना माना। हर सीजन के बाद लोग और कहानी देखना चाहते थे, किरदारों पर चर्चा करते थे और अपनी-अपनी थ्योरी बनाते थे। कई मायनों में यह फिल्म जितनी हमारी है, उतनी ही दर्शकों की भी है।

श्वेता त्रिपाठी ने अपने किरदार गोलू गुप्ता के बदलाव को लेकर भी बात की। उन्होंने कहा, गोलू का सफर बेहद भावनात्मक रहा है। शुरुआत में गोलू एक ऐसी लड़की थी, जो सही और गलत की अपनी समझ के साथ आगे बढ़ती थी, लेकिन परिस्थितियों ने उसे धीरे-धीरे बदल दिया। उसने अपने सफर में कई दर्द झेले, बदले की भावना से गुजरी और ताकत के साथ अपनी पहचान बनाने की कोशिश की।

श्वेता ने कहा, मेरे लिए इस किरदार को निभाना इसलिए भी खास रहा क्योंकि मैंने लंबे समय तक गोलू के हर बदलाव को महसूस किया। मैंने उसे कई सालों तक जिया है। वह एक ऐसी युवा महिला थी, जो सही काम करने में विश्वास रखती थी और धीरे-धीरे ऐसी इंसान बनी, जो ताकत, दुख, बदले और महत्वाकांक्षा के बीच खुद को संभाल रही थी।

उन्होंने कहा, किसी किरदार का लोगों के जीवन से जुड़ जाना किसी भी कलाकार के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। गोलू गुप्ता का किरदार मेरे करियर के सबसे यादगार किरदारों में से एक रहेगा।

'एक-दूजे से प्यार करो वरना...' अरबाज के बेटे ने छात्रों के लिए किया पोस्ट ; लिखा- पापा से उनके पापा ने यही कहा था

इन दिनों नीट परीक्षा लीक को लेकर छात्र विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। कई सितारों ने उन्हें सपोर्ट किया है। सलमान खान ने भी सोशल मीडिया पोस्ट साझा कर छात्रों को समर्थन दिया। हालांकि, उन्होंने स्टूडेंट्स से प्रदर्शन खत्म करने की अपील भी की है। इस बीच सलमान खान के भतीजे अरहान खान ने भी सोशल मीडिया पर अपनी बात रखी है।

अरहान खान अभिनेता अरबाज खान और मलाइका अरोड़ा के बेटे हैं। अरहान ने सीधे स्टूडेंट प्रोटेस्ट पर तो कुछ नहीं कहा, मगर अपने हालिया सोशल मीडिया पोस्ट में छात्रों और शिक्षा की बात की है। दरअसल, अरहान खान ने अपनी हालिया अरुणाचल प्रदेश के तवांग क्षेत्र की यात्रा का जिक्र करते हुए एक तस्वीर साझा की है। इसी के साथ उन्होंने जिंदगी, प्यार, शिक्षा और स्टूडेंट सहित कई चीजों पर बात की है।

अरहान खान ने एक तस्वीर साझा करते हुए लिखा है, 'अरुणाचल प्रदेश के तवांग के उत्तर-पूर्व में समुद्र तल से 12,165 फीट की ऊंचाई पर, पहाड़ों के बीच माधुरी झील बसी है। यह जगह इतनी खूबसूरत है कि आपको यकीन हो जाता है कि सिर्फ प्यार जैसी ताकत ही इसे इतना बेदाग और सुंदर बनाए रख सकती है। तभी मेरी नजर एक चीज पर पड़ी और मैंने यह देखा। मैं यह फोटो शेयर करना चाहता था, क्योंकि इसने मेरे दिल में अपने देश के लिए प्यार जगाया और अब इसे शेयर करना पहले से कहीं ज्यादा सही लग रहा है।

'एक-दूसरे से प्यार करो वरना मिट जाओगे'

अरहान ने आगे लिखा है, 'पिछले कुछ दिनों में हमने एक-दूसरे का बोझ बांटने, इंसानियत को चुनने और हर चीज से ऊपर उठकर प्यार दिखाने का शानदार नजारा देखा है। मेरे पिता के दाहिने हाथ पर एक टैटू है, जिस पर लिखा है 'एक-दूसरे से प्यार करो वरना मिट जाओगे' (love each other or perish)। यह शब्द उन्हें उनके पिता, सलीम खान ने दिए थे। उनके हाथ पर लिखे ये शब्द अब इस पल के लिए एक भविष्यवाणी जैसे लगते हैं। मेरे पास कहने के लिए सही शब्द नहीं हैं, लेकिन यह तस्वीर बिल्कुल सही बैठती है। किसी और समय यह शायद सिर्फ एक तस्वीर होती, लेकिन मुझे लगता है कि अब जब मेरी पीढ़ी की भावनाएं एक जैसी हैं, तो इसे भरपूर प्यार और सपोर्ट मिलेगा। 'जेनरेशन Z' इसे सही भावना और नजरिए के साथ आगे ले जाएगी। GenZ, मैं तुमसे प्यार करता हूं और इस समय इसका हिस्सा होने पर मुझे गर्व है। मैं यह तस्वीर तुम्हें सौंपता हूं। हम सब स्टूडेंट हैं। जिंदगी के छात्र। आइए, सही बातें सिखाएं। जय हिंद'।

अरबाज बोले- 'तुम पर गर्व है अरहान'

अरहान के पोस्ट पर पिता अरबाज खान ने लिखा है, 'लव यू, मुझे तुम पर गर्व है अरहान'। वहीं, मलाइका ने लिखा है, 'तुमने मुझे गौरवान्वित कर दिया'। बता दें कि अरबाज खान और मलाइका की शादी साल 1998 में हुई थी। मगर, 2017 में इनका तलाक हो गया। मलाइका से तलाक के बाद अरबाज की दूसरी शादी शूरा खान से हुई है।

रॉकिंग स्टार यश की टॉक्सिक के दूसरे गाने मदहोश ने जीता फैंस का दिल, ग्रैंड विजुअल्स देख बोले, बड़े पर्दे के लिए बनी है फिल्म!

टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स का दूसरा गाना 'मदहोश' रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। रॉकिंग स्टार यश और तारा सुतारिया की फ्रेश ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री ने फैंस को मदहोश कर दिया है। जहां 'तबाही' में एक गहरा और इंटेंस इमोशनल रिश्ता देखने को मिला था, वहीं 'मदहोश' दर्शकों को 'टॉक्सिक' की दुनिया की एक बिल्कुल अलग झलक दिखाता है। गाने में यश के किरदार के नए रंग सामने आए हैं, जिसने फिल्म को लेकर फैंस की उत्सुकता और बढ़ा दी है।

गाना रिलीज होने के बाद से ही सोशल मीडिया तारीफों से भर गया है। फैंस को खास तौर पर यश के सटल एक्सप्रेशंस, तारा सुतारिया के साथ उनकी सहज केमिस्ट्री और फिल्म का जबरदस्त सिनेमैटिक स्केल बेहद पसंद आ रहा है। सोशल मीडिया पर कुछ यूजर्स ने अपनी एक्साइटमेंट कुछ इस तरह जाहिर कीः प्रोडक्शन डिजाइन से लेकर कैमरा वर्क तक, सब कुछ टॉप क्लास है। पहले और अब प्तरूड्डम्रद्धशह्यद्ध ने साबित कर दिया है कि प्तञ्जश&द्वष बड़े पर्दे के लिए बनी है।

फिल्म का मूड और माहौल एक अलग ही लेवल का है। यश और तारा सुतारिया की ऑन-स्क्रीन केमिस्ट्री बिल्कुल इलेक्ट्रिक है! 'टॉक्सिक' बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ने वाली है। राया और गंगा स्टाइल, एटीट्यूड और दमदार स्क्रीन प्रेजेंस का परफेक्ट कॉम्बिनेशन हैं। दोनों का हर फ्रेम करिश्मे, इंटेंसिटी और जबरदस्त स्वैग से भरा हुआ है। नजरें हटाना मुश्किल है। एक और फैन ने लिखा, प्तञ्जश&द्वष शायद हाल की उन चुनिंदा बिग बजट फिल्मों में से एक है, जिसका बजट सच में स्क्रीन पर नजर आ रहा है... विजुअल्स कमाल के हैं।

'मदहोश' ने फिल्म के किरदारों और उनके रिश्तों को लेकर भी सोशल मीडिया पर नई बहस छेड़ दी है। एक यूजर ने लिखा, तारा बहुत क्यूट लगीं, लेकिन यश म कियारा का ऑरा ही एक अलग लेवल का है। वहीं एक अन्य फैन ने कहा, तारा सुतारिया, कियारा आडवाणी और नयनतारा सभी एक साथ हैं, लेकिन यश का स्वैग फिर भी सबसे अलग है।

'मदहोश' को मिल रहे जबरदस्त रिस्पॉन्स ने 'टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' को लेकर एक्साइटमेंट को और बढ़ा दिया है। जहां 'तबाही' ने दर्शकों को फिल्म की पैशनेट और इंटेंस इमोशनल दुनिया से रूबरू कराया था, वहीं 'मदहोश' कहानी को एक नया आयाम देता है और एक और दिलचस्प रिश्ते की ओर इशारा करता है।

डायरेक्टर गीतू मोहनदास की बनाई इस लेयर्ड दुनिया की हर नई झलक सोशल मीडिया पर चर्चा छेड़ रही है और साल की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में शामिल 'टॉक्सिक' से उम्मीदें लगातार बढ़ती जा रही हैं। मॉन्स्टर माइंड क्रिएशंस के बैनर तले और केवीएन प्रोडक्शंस के सहयोग से बनी 'टॉक्सिकः ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन-अप्स' को रॉकिंग स्टार यश ने लिखा और प्रोड्यूस किया है, साथ ही वह फिल्म में मुख्य भूमिका भी निभा रहे हैं।

गीतू मोहनदास के निर्देशन में बनी इस फिल्म में यश के साथ नयनतारा, कियारा आडवाणी, तारा सुतारिया, रुक्मिणी वसंत और हुमा कुरैशी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगी। फिल्म 26 अगस्त 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित ।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादकः प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com